24 वां अंक (अप्रैल - सितंबर)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

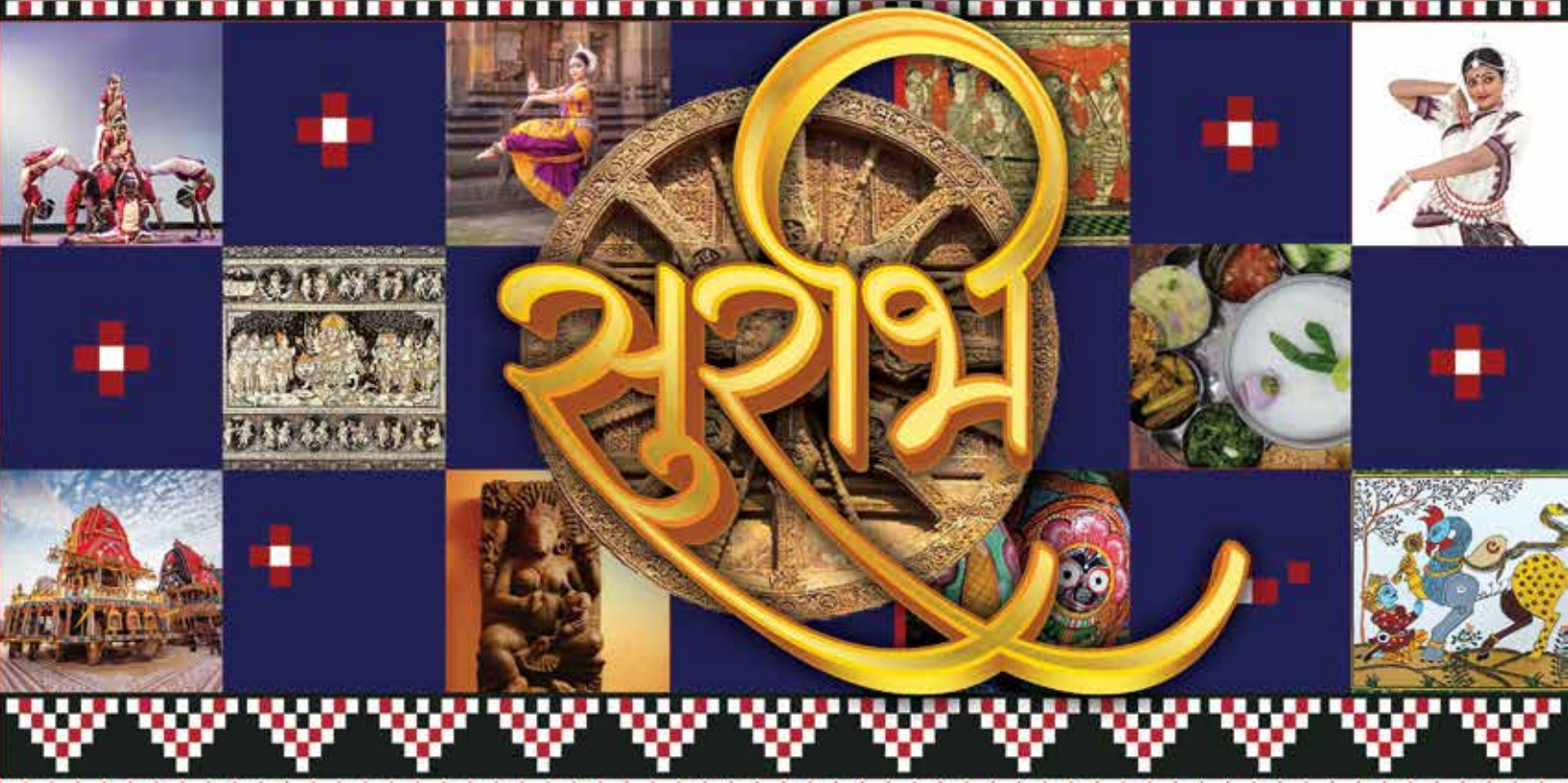

कार्यालय

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - I) ओडिशा, भुवनेश्वर

महालेखाकार (लेखापरीक्षा - II) ओडिशा, भुवनेश्वर

Accountant General (Audit-II)
Odisha, Bhubaneswar

संदेश

श्री राज कुमार

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)

राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व होने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी का संवर्धन हमारा नैतिक दायित्व भी है। हिंदी पत्रिका "सुरभि" का प्रकाशन इसी दायित्व का निर्वहन करने का एक प्रयास है। कार्यालय के कार्मिकों द्वारा राजभाषा हिंदी में प्रकाशित रचनाएं उनको राजभाषा हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा देती हैं जो कार्यालयीन स्तर पर हिंदी में काम-काज को बढ़ावा देने हेतु सहायक सिद्ध होती हैं।

राजभाषा हिंदी ने सदैव पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया है। इस दिशा में हिंदी गृह पत्रिका "सुरभि" अपनी भूमिका बखूबी निभा रही है और यह भी आशा है कि भविष्य में भी "सुरभि" के आगामी अंक इसी प्रकार राजभाषा हिंदी को समृद्ध बनाने में अग्रसर रहेंगे।

राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ाने के लिए सरकारी कार्यालयों में हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। इसी क्रम में "सुरभि" पत्रिका भी कार्यालय के कार्मिकों की लेखन प्रतिभा, कलात्मकता, रचनात्मकता को उभारने में सदैव अपना योगदान देती रही है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

पत्रिका की सफलतार्थ मेरी शुभकामनाएं।

(राज कुमार)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा- I)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री विश्वनाथ सिंह जादौन
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

कार्यालयीन अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 24 वें अंक को आप सभी पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। पत्रिका का प्रकाशन न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में प्रशंसनीय प्रयास है अपितु यह कार्यालय के अधिकारियों - कर्मचारियों के साथ - साथ उनके परिवारजनों के अन्य सदस्यों को भी अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए एक प्लेटफॉर्म प्रदान करती है।

विगत कुछ वर्षों से राष्ट्रीय - वैश्विक जन - जीवन में प्रेम,शांति, सद्भावना एवं विश्व बंधुत्व की भावना से ओत - प्रोत पत्र - पत्रिकाओं की कमी महसूस की जा रही थी। मुझे उम्मीद है कि "सुरभि" पत्रिका इस कमी को पूरा करने में सफल होगी। मैं "सुरभि" पत्रिका के 24 वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल के सदस्यो को हार्दिक बधाई देता हूँ।

विश्वनाथ सिंह

श्री विश्वनाथ सिंह जादौन
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री श्रीराज अशोक
वरि. उपमहालेखाकार/ प्रशासन
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

राजभाषा हिंदी को समर्पित हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका सुरभि के 24 वें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। हिंदी, राष्ट्र के साहित्यिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विकास की धरोहर है। "सुरभि" पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति हमारे सहर्ष प्रेम एवं लगाव को दर्शाने के साथ - साथ कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के लगातार विकास के संवर्धन की भी पुष्टि करती है।

मैं पत्रिका के सफल भविष्य की कामना करता हूँ और संपादक मण्डल के साथ – साथ सभी रचनाकारों, बच्चों एवं पूरे विभाग को बधाई देता हूँ।

श्री श्रीराज अशोक
वरि. उपमहालेखाकार/ प्रशासन
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

सुश्री तान्या अम्बष्ठ
उप महालेखाकार (प्रशासन)

कार्यालयीन अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "सुरभि" के 24वें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। यह पत्रिका इस कार्यालय के कार्मिकों की राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा, समर्पण एवं रूचि को दर्शाती है। विभिन्न लेखों, कविताओं, संस्मरणों आदि के रूप में कार्यालय के जिन कर्मियों ने पत्रिका के प्रकाशन में अपना योगदान दिया है उनका मैं अभिनंदन व्यक्त करती हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक भी कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में भी सहायक सिद्ध होगा। "सुरभि" पत्रिका हिंदी की प्रगति का वह साक्ष्य है जो कि कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के संगठित प्रयासों का प्रतिबिंब बनकर हिंदी के प्रति कार्यालय की निष्ठा को परिलक्षित कर रही है।

पत्रिका में अपने लेख रूपी रंगों से पत्रिका को सुसज्जित करने हेतु रचनाकारों एवं संपादक मंडल के प्रयासों की सराहना करते हुए मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देती हूँ।

तान्या अम्बष्ठ

(तान्या अम्बष्ठ)
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री सचिन कृष्ण कौशिक

उप महालेखाकार (ए.एम.जी-।। एवं ।V)

गृह हिंदी पत्रिका "सुरभि" के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान का उत्कृष्ट प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी एक सरल भाषा ही नहीं अपितु पूरे देश में जानी एवं समझे जाने वाली भाषा है। अपनी सरलता के कारण हिंदी हमारे विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्ति का एक सुचारू माध्यम है।

अत: हम सभी का यह नैतिक कर्तव्य है कि हम राजभाषा का सम्मान करते हुए तथा कार्यालय में हिंदी में कामकाज कर राजभाषा हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करें। आज हिंदी बोल-चाल की भाषा तक सीमित नहीं रही अपितु विज्ञान, उद्योग एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रही है।

"सुरभि" इस दिशा में निरंतर प्रयासरत है। पत्रिका के माध्यम से न केवल कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहन मिला है बल्कि कर्मचारियों में भी हिंदी लेखन की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह एक विशेष उपलब्धि है। आशा है "सुरभि" पत्रिका इसी प्रकार निरंतर इस दिशा में प्रयासरत रहेगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

(सचिन कृष्ण कौशिक)
उप महालेखाकार (ए.एम.जी-।। एवं ।V)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-।)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री विमलेश कुमार
उप महालेखाकार (ए.एम.जी-III)

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्यालय की हिंदी पत्रिका "सुरभि" का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका में समाविष्ट सामग्री एवं छायाचित्र कार्यालयीन गतिविधियों की झलक दिखाते हैं। पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के कार्मिकों को अपनी लेखन प्रतिभा दिखाने का अवसर भी मिलता है।

साथ ही राजभाषा हिंदी में कार्य करने की प्रेरणा भी मिलती है। यह एक सराहनीय प्रयास है। अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका में योगदान, कर्मचारियों का राजभाषा हिंदी के प्रति उनके प्रेम एवं निष्ठा को दर्शाता है। "सुरभि" पत्रिका का प्रकाशन ई-पत्रिका के रूप में किया जाना पर्यावरण की दृष्टि से एक सफल पहल है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार में गृह हिंदी पत्रिका एक सशक्त माध्यम है जो कार्यालयीन कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में निरंतर अपना योगदान देती आ रही है। कार्यालय के कार्यालयीन कार्य में हिंदी का बढ़ता हुआ प्रतिशत इस बात का परिचायक है।

पत्रिका के वर्तमान अंक एवं आगामी अंकों की प्रगति एवं उद्देश्य पूर्ति हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामानाएं।

(विमलेश कुमार)
उप महालेखाकार (ए.एम.जी-III)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओडिशा, भुवनेश्वर

संदेश

श्री अशोक पंडा
कल्याण अधिकारी

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "सुरभि" के 24वें अंक के प्रकाशन पर सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

हिंदी हमारी बोलचाल की भाषा के साथ-साथ राजकाज की भाषा भी है। हम सब अपने संवैधानिक दायित्वों का निर्वाह करते हुए राजभाषा को प्रगति पथ पर ले जाने में सफल हो रहे हैं। मीलों हम आ गये और मीलों हमें जाना है और यह तभी संभव हो सकेगा जब हम इसके विकास में यथासंभव योगदान देते रहेंगे।

इसके लिए यह आवश्यक है कि हम छोटी-छोटी कोशिशों से शुरूआत करें और अपने कार्यालयीन कार्यों में इसका समावेश करें। ये छोटी-छोटी कोशिशें ही धीरे-धीरे हमें राजभाषा हिंदी में पूर्णत: कार्य करने में सक्षम बनाती हैं। आज सम्पूर्ण विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों में हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है जो इस बात का सूचक है कि हिंदी विश्व स्तर पर अपना परचम लहरा रही है।

सुरभि के 24वें अंक के माध्यम से रचनाकारों ने राजभाषा हिंदी के साहित्यिक स्वरूप को निखारने का प्रयास किया है। मैं इस अंक के प्रकाशन अवसर पर सभी रचनाकारों एवं "सुरभि" परिवार का अभिनंदन करता हूँ।

(श्री अशोक पंडा)
कल्याण अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओडिशा, भुवनेश्वर

आपके पत्र

Indian Audit & Accounts Department
Office of the Principal Accountant General (Audit) Bihar
Birchand Patel Marg, Patna-800001.

दिनांक-25.09.2024

सेवा में,
उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय,ओड़िशा,
भुवनेश्वर 751001

विषय : ई-पत्रिका "सुरभि" के 23वें अंक के संबंध में।

महोदय,

[illegible]

भवदीय,

MANOJ KUMAR NO. 1

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

Signed by Manoj Kumar
Date: 24-09-2024 18:27:41

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit) Chhattisgarh, Raipur

क्र.हिन्दी कक्ष/पत्राचार/2023-24/क्र.- 359

दिनांक / Date : 11-09-2024

प्रति,
उप महालेखाकार/प्रशासन
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
ओडिशा : भुवनेश्वर

विषय :- कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका "सुरभि" 23वें अंक के प्रेषण के संबंध में।
संदर्भ :- संख्या राजभाषा अनुभाग/07/2024/146 दिनांक 30-08-2024

महोदय/महोदया

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "सुरभि" के 23वें अंक की ई-पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रोचक एवं प्रेरणा दायक है। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर लेख एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
पश्चिम बंगाल
ट्रेज़री बिल्डिंग्स, 2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता – 700 001

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
TREASURY BUILDINGS, 2, GOVT. PLACE (WEST),
KOLKATA-700 001

दिनांक: 08.10.2024

सेवा में,
उप महालेखाकार/प्रशासन
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) का कार्यालय
ओडिशा : भुवनेश्वर

विषय:- अर्धवार्षिक ई-पत्रिका "सुरभि" के 23वें अंक की पावती संबंधी।

महोदय/महोदया,

[illegible]

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा - वाणिज्यिक का कार्यालय बेंगलूरु-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT DEFENCE- COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

दिनांक - 30.09.2024

सेवा में,
हिन्दी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा - I) का कार्यालय,
ओडिशा, भुवनेश्वर - 751001

विषय - प्रशंसा पत्र।
महोदय/महोदया,

[illegible]

धन्यवाद,

भवदीय,

हिन्दी अधिकारी

सुरभि परिवार

परामर्शदाता समिति

श्री राज कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) ओडिशा

श्री विश्वनाथ सिंह जादौन
महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) ओडिशा

श्री श्रीराज अशोक
वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) ओडिशा

सुश्री तान्या अम्बष्ठ
उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) ओडिशा

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

सुश्री तान्या अम्बष्ठ
उप महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-I) ओडिशा

सह संपादक

श्री आशुतोष प्रसाद प्रतिहारी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती शुभस्मिता आचार्य
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री गिरराज शरण अग्रवाल
हिंदी अधिकारी

श्री पुरुषोत्तम गिरि
वरिष्ठ अनुवादक

श्रीमती संयुक्ता जड़िया
कनिष्ठ अनुवादक

श्री राहुल कुमार वर्मा
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री दीपिका चटर्जी
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री सुषमा साव
कनिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार का नाम	पृष्ठ सं.
1	प्रयागराज	श्री राजकुमार	1
2	सनातन और उसका मानवतावादी दर्शन	श्री विमलेश कुमार	4
3	बाघ	श्री आशुतोष प्रतिहारी	6
4	राजभाषा कार्यान्वयन में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों का योगदान	श्री गिरराज शरण अग्रवाल	9
5	भारतीय हस्तशिल्प की प्रतिष्ठा : ओडिशा की 'तारकशी'	श्री पुरुषोत्तम गिरि	11
6	हिंदी : भाषा से राजभाषा तक का सफर	श्री राहुल कुमार वर्मा	15
7	हाथी : कोई नहीं साथी	श्री गुप्त प्रसाद मिश्र	18
8	श्री चैतन्य महाप्रभु	श्रीमती दीपिका चटर्जी	19
9	पाँचवा वेद	श्री पी श्रीनिवास राव	21
10	ॐ की ध्वनि एवं ध्यान	श्री सत्यनारायण महान्ति	23
11	स्वस्थ्य जीवन शैली	श्री राजेश झा	25
12	स्वास्थ्य के क्षेत्र में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता): संभावनाएं, चुनौतियां और समाधान	श्री अमित कुमार प्रधान	28
13	नव भारत के निर्माण में महिलाओं की भूमिका	सुश्री आँखि सरकार	31
14	हर घर तिरंगे की पुकार	श्रीमती मीनाक्षी आचार्य	33
15	एक दोस्त (कविता)	श्री आनंद सिंह कोस्टा	35
16	नारी तेरी जय जयकार (कविता)	श्रीमती एकता	36
17	चिड़िया रानी (कविता)	सुश्री आक्षिता मोहपात्रा	37
18	आजादी का पहला दिन (कविता)	सुश्री दिव्यंका पलेई	38

हिंदी भाषा से संबंधित सूक्तियां

- *हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है*

- स्वामी दयानंद

- *राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है*

- महात्मा गांधी

- *भारतीय भाषाएं नदियां हैं और हिंदी महानदी*

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर

- *हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है, जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकते हैं*

- मदन मोहन मालवीय

- *हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया*

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

- *हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है*

- सुमित्रानंदन पंत

- *हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है*

- पुरुषोत्तम दास टंडन

- *हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है*

- डॉ. संपूर्णानंद

- *आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए*

- महावीर प्रसाद द्विवेदी

- *समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है*

- जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

- *देवनागरी ध्वनिशास्त्र की दृष्टि से अत्यंत वैज्ञानिक लिपि है*

- रविशंकर शुक्ल

श्री राज कुमार
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

प्रयागराज

प्रयागराज शहर उत्तर प्रदेश के सबसे बड़े शहरों में से एक है और तीन नदियों- गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर स्थित है। संगम स्थल को त्रिवेणी के नाम से जाना जाता है और यह हिंदुओं के लिए विशेष रूप से पवित्र है। आर्यों की प्रारंभिक बस्तियाँ इसी शहर में बसी थीं जिसे तब प्रयाग के नाम से जाना जाता था।

"प्रयागस्य प्रवेशु पापं नाश्वती तत्क्षणम्"

अर्थात प्रयाग में प्रवेश से सभी पाप धुल जाते हैं।

प्रयागराज भारत के ऐतिहासिक और पौराणिक शहरों में से एक है जिसका अतीत और वर्तमान गौरवशाली है। यह हिंदू, मुस्लिम, जैन और ईसाईयों की मिश्रित संस्कृति का शहर है। इसकी पवित्रता पुराणों, रामायण और महाभारत में इसके उल्लेखों से प्रकट होती है। हिंदू पौराणिक कथाओं के अनुसार, त्रिदेवों के रचयिता भगवान ब्रह्मा ने सृष्टि के आरंभ में 'प्रकृति यज्ञ' करने के लिए पृथ्वी (यानी प्रयाग) पर एक भूमि को चुना और उन्होंने इसे तीर्थ राज या सभी तीर्थस्थलों का राजा भी कहा। 'पद्म पुराण' के अनुसार - "जैसे सूर्य चंद्रमा के बीच और चंद्रमा तारों के बीच है, वैसे ही प्रयाग सभी तीर्थस्थलों में श्रेष्ठ है"। ब्रह्म पुराण में प्रयाग में स्नान का उल्लेख है - माघ के महीने में प्रयाग में गंगा यमुना के तट पर स्नान करने से लाखों अश्वमेध यज्ञों का फल मिलता है।

प्रयाग सोम, वरुण और प्रजापति का जन्म स्थान है। प्रयाग को ब्राह्मण (वैदिक) और बौद्ध साहित्य में पौराणिक व्यक्तित्वों से जोड़ा गया है। यह महान ऋषि भारद्वाज, ऋषि दुर्वासा और ऋषि पन्ना की सीट थी। ऋषि भारद्वाज लगभग 5000 ईसा पूर्व यहाँ रहते थे और 10000 से अधिक शिष्यों को शिक्षा देते थे। वे प्राचीन दुनिया के सबसे महान दार्शनिक थे। जिस तरह से सनातन धर्म अनादि है उसी प्रकार से प्रयागराज की महिमा का कोई आदि-अन्त नहीं है। मान्यताओं के अनुसार उत्कृष्ट यज्ञ और दान, दक्षिणा आदि से सम्पन्न स्थल देखकर भगवान विष्णु एवं भगवान शिव शंकर आदि देवताओं ने इस स्थल का नाम प्रयागराज रख दिया, ऐसा उल्लेख कई पुराणों से मिलता है।

प्रकृष्टं सर्वयोगभ्यः प्रयागमिति गीयते।
दृष्ट्वा प्रकृष्टयागेभ्यः पुष्टेभ्यो दक्षिणादिभिः।
प्रयागमिति तन्नाम कृतं हरिहरादिभिः।।

संगम के बहुत करीब वर्तमान झूंसी क्षेत्र चंद्रवंशीय (चंद्र वंश) राजा पुरुरवा का राज्य था। निकटवर्ती कौशाम्बी वत्स और मौर्य शासन के दौरान समृद्ध हुआ। प्राचीन वस्तुओं का सबसे पुराना स्मारक अशोक स्तंभ तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के शिलालेखों के साथ अपने साथी राजाओं को दिए गए निर्देशों और राजा समुद्रगुप्त की प्रशंसा के शिलालेखों को स्पष्ट करता है। 643 ई. में चीनी यात्री हुआन त्सांग ने पाया कि प्रयाग में बहुत से हिंदू रहते थे जो इस स्थान को बहुत पवित्र मानते थे।

1575 ई. में सम्राट अकबर ने संगम के सामरिक महत्व से प्रभावित होकर "इलाहाबास" के नाम से इस शहर की स्थापना की, जो बाद में इलाहाबाद बन गया, जिसका अर्थ है "अल्लाह का शहर"। मध्यकालीन भारत में इस शहर को भारत का धार्मिक-सांस्कृतिक केंद्र होने का गौरव प्राप्त था। लंबे समय तक यह मुगलों की प्रांतीय राजधानी थी। बाद में इसे मराठों ने अपने कब्जे में ले लिया।

1801 ई. में इस शहर का ब्रिटिश इतिहास इसी वर्ष शुरू हुआ जब अवध के नवाब ने इसे ब्रिटिश राजगद्दी को सौंप दिया। ब्रिटिश सेना ने अपने सैन्य उद्देश्यों के लिए किले का इस्तेमाल किया। 1857 ई. में यह शहर स्वतंत्रता संग्राम का केंद्र था और बाद में अंग्रेजों के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का केंद्र बन गया। 1858 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी ने आधिकारिक तौर पर भारत को ब्रिटिश सरकार को यहीं मिंटो पार्क में सौंप दिया। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद इस शहर का नाम "इलाहाबाद" रखा गया और इसे आगरा और अवध के संयुक्त प्रांत की राजधानी बनाया गया।

1868 ई. में इलाहाबाद उच्च न्यायालय की स्थापना के बाद यह न्याय का केन्द्र बन गया। 1871 ई. में ब्रिटिश वास्तुकार सर विलियम इमर्सन ने कोलकाता में विक्टोरिया मेमोरियल का डिजाइन तैयार करने से तीस साल पहले एक भव्य स्मारक ऑल सेंट कैथेड्रल का निर्माण कराया। 1887 ई. में प्रयागराज चौथे सबसे पुराने विश्वविद्यालय - इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ज्ञान का केंद्र बन गया। प्रयागराज में भारतीय स्थापत्य परंपराओं के साथ समन्वय में बनी कई विक्टोरियन और जॉर्जियाई इमारतें हैं।

यह शहर ब्रिटिश शासन के खिलाफ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का केंद्र था जिसका केंद्र आनंद भवन था। यह प्रयागराज (तब इलाहाबाद के नाम से जाना जाता था) में था, जहां महात्मा गांधी ने भारत को आजाद कराने के लिए अहिंसक प्रतिरोध का कार्यक्रम प्रस्तावित किया था। प्रयागराज ने स्वतंत्रता के बाद भारत के सबसे अधिक प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी, वी.पी. सिंह को जन्म दिया है। पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र थे।

प्रयागराज मूलतः एक प्रशासनिक और शैक्षिक शहर है। उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश के महालेखापरीक्षक, रक्षा लेखा के प्रधान नियंत्रक (पेंशन) पीसीडीए, उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद (यूपी बोर्ड) कार्यालय, पुलिस मुख्यालय और शिक्षा में मोती लाल नेहरू क्षेत्रीय इंजीनियरिंग कॉलेज एमएनआरईसी, चिकित्सा और कृषि महाविद्यालय, भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) आईटीआई नैनी और आईआईएफसीओ फूलपुर, त्रिवेणी ग्लास यहां के कुछ प्रमुख उद्योग हैं।

सभ्यता के दिनों से ही प्रयागराज शिक्षा, ज्ञान और लेखन का केंद्र रहा है। यह भारत का सबसे जीवंत राजनीतिक, आध्यात्मिक और आध्यात्मिक रूप से जागरूक शहर है। भारत देश, विश्व की आत्मा कहलाता है और तीर्थराज प्रयागराज भारत का प्राण कहा गया है। अरण्य और नदी संस्कृति के बीच जन्म लेकर ऋषियों, महर्षियों की तपोभूमि के रूप में पंचतत्वों को पल्लवित करने वाली प्रयागराज की धरती पर सदियों से महाकुम्भ, अर्द्धकुम्भ, माघ मेले आदि में लाखों, करोड़ों भक्तों की आस्था, देश को हमेशा उर्जा देती रही है। यहां प्रत्येक बारह वर्ष उपरान्त महाकुम्भ, छः वर्ष उपरान्त अर्द्धकुम्भ और प्रत्येक वर्ष माघ मेले का आयोजन होता है जिसमें असंख्य श्रद्धालु बिना निमंत्रण के त्रिवेणी स्नान करने आते हैं। प्रयागराज की श्रेष्ठता के सम्बन्ध में यह भी कहा गया है कि जिस प्रकार ग्रहों में सूर्य और चन्द्रमा श्रेष्ठ होता है उसी तरह तीर्थों में प्रयागराज सर्वोत्तम तीर्थ है।

ग्रहाणां च यथा सूर्यो नक्षत्राणां यथा शशी।
तीर्थानामुत्तमं तीर्थ प्रयागाख्यमनुत्तमम्।।

स्कन्द पुराण, अग्नि पुराण, शिव पुराण, ब्रह्मपुराण, वामन पुराण, बृहन्नारदीय पुराण, मनुस्मृति, वाल्मीकीय रामायण, महाभारत, रघुवंश महाकाव्य आदि में भी प्रयागराज की महत्ता का विस्तार से वर्णन किया गया है। प्रयाग में त्रिवेणी के तट पर केवल गंगा, यमुना तथा अदृश्य सरस्वती का संगम ही नहीं अपितु अनेकानेक सम्प्रदायों, संस्कृतियों एवं ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का भी अद्भुत संगम विद्यमान है। शास्त्रों के अनुसार जहां गंगा, यमुना और सरस्वती तीनों का संगम हो वह ब्रह्मलोक और विष्णुलोक के बराबर का स्थान हो जाता है।

महर्षि वेदव्यास के अनुसार तीर्थराज प्रयाग में यज्ञ करना या यज्ञ आदि क्रियाओं में सम्मिलित होने से मनुष्य के सारे पाप, पुण्य में परिवर्तित हो जाते हैं ऐसी तीर्थराज प्रयाग की अद्भुत

महिमा है। तीर्थराज प्रयाग एक ऐसा पावन स्थल है, जिसकी महिमा अधिकांश धर्म ग्रंथों में वर्णित है। तीर्थराज प्रयाग को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रदाता कहा गया है।

अपनी उत्कृष्टता के कारण यह 'प्रयाग' है और प्रधानता के कारण 'राज' शब्द से युक्त है। माघ मास में जब सूर्य मकर राशि में आए तो एक माह तीर्थराज प्रयाग में संगम तट पर रहकर कल्पवास शरीर और मन दोनों का कायाकल्प होता है। किसी भी प्रकार के पाप की मुक्ति के लिए जो यहां दान-पुण्य सहित सच्चे मन से आराधना करता है और कम से कम तीन रात्रि निवास करता है उसे पापों से मुक्ति मिलती है।

संगम का क्षेत्र, अक्षय क्षेत्र कहलाता है, यहां किया हुआ धर्म-कर्म हमेशा अक्षय रहता है उसका क्षय नहीं होता है, यही कारण है कि सदियों से पुण्य स्नान, दान की परम्परा अविच्छिन्न रूप से चली आ रही है। जनवरी 2025 में प्रयागराज में विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन महाकुम्भ के रूप में आयोजित होगा जिसमें देश-विदेश से करोड़ों भक्तों का आगमन, गंगा, यमुना, अदृश्य सरस्वती का संगम स्नान एवं कल्पवास होगा। महाकुंभ के समय संगम क्षेत्र एक जिले के रूप में परिवर्तित कर दिया जाता है जिसका शासन व प्रशासन प्रयागराज जिले से अलग संगम क्षेत्र जिले की तरह कार्य करने लगता है जिसके अलग जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक एवं सारे विभागाध्यक्षों की नियुक्ति की जाती है। नदियों के साथ-साथ यहां ज्ञान की त्रिवेणी अनवरत प्रवाहित होती है। महाकुम्भ के दौरान प्रयाग की धरती पर ज्ञान, विज्ञान, अध्यात्म की चर्चा भारतीय संस्कृति को पल्लवित करेगी। प्रयाग महात्म्य के अनुसार अनादिकाल से प्रयागराज ज्ञान और भक्ति का सर्वश्रेष्ठ स्थान रहा है।

श्री विमलेश कुमार
उप महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

सनातन और उसका मानवतावादी दर्शन

हमारा देश भारतवर्ष एक अति प्राचीन सभ्यता-संस्कृति वाला देश है। यहाँ हजारों सालों से लोग जिस जीवन पद्दति को अपनाकर अपना जीवन यापन कर रहे हैं उसको समग्र रुप से सनातन सभ्यता-संस्कृति अथवा हिन्दू संस्कृति के नाम से जाना जाता है। किसी देश-समाज की सभ्यता और संस्कृति का आधार वहाँ का दर्शन होता है। सरल भाषा में कहा जा सकता है कि जीवन के प्रति उसकी विचारधारा और आध्यात्मिक दर्शन ही सभ्यता का आधार होता है। सनातन धर्म दर्शन के स्तम्भ पर खड़ा है जो अत्यंत ही उदार और मानवतावादी है। इस दर्शन की तुलना और किसी दर्शन से संभव नहीं है क्योंकि मानवीय गुणों की उत्कृष्टता से भरपूर इस दर्शन में जितनी आध्यात्मिकता, उदारता और नैतिकता है वो अन्यत्र दुर्लभ है। यहाँ सनातन संस्कृति के मानवतावादी दृष्टिकोण की सुन्दरता, नैतिकता और उदारता से ओत-प्रोत कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं जो अन्यत्र दुर्लभ हैं:-

(i) अयं निज: परो वेत्ति गणनां लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

यह श्लोक महोपनिषद अध्याय 4 के श्लोक संख्या 71 से लिया गया है इसका तात्पर्य है कि यह मेरा है, वो दूसरों का है ऐसी सोच संकीर्ण विचार के लोगों की होती है जबकि उदार चित्त वालों के लिए तो पूरी पृथ्वी ही अपनी है और उस पर निवास करने वाले सभी मनुष्य परिवार के कुटुम्ब की तरह ही होते हैं। यहाँ संसार की समस्त मानव जातियों के बीच कोई भेदभाव नहीं है अर्थात सबको एक ही परिवार के सदस्यों के रूप में स्वीकार किया गया है। अपना और पराया जैसा कोई भेदभाव नहीं है।

(ii) मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्।
आत्मवत् सर्वभूतेषु य: पश्यति स पंडित:॥

यह श्लोक कामंदक द्वारा लिखित पुस्तक 'कामन्दकीय नीतिसार' से ली गई है जिसका अर्थ है जो व्यक्ति पराई स्त्री को माता के समान मानता है , दूसरे के धन को ढेले (मिट्टी) के समान तुच्छ समझता है और संसार के समस्त जीवों को अपने जैसा ही देखता है वही सच्चा विद्वान अर्थात ज्ञानी है। यहाँ ध्यान देने योग्य है कि सभी नारियों को अपनी माता के समान ही सम्मान देने की बात है, तथा दूसरे के धन पर कुदृष्टि डालने को निषिद्ध किया गया है। साथ ही दया और करुणा के संबंध में समस्त जीवों को अपने जैसा ही मानकर उन पर दया प्रेम और करुणा का प्रदर्शन करने की प्रेरणा है। यहाँ उल्लेखनीय है कि जब हम पराई स्त्री को माता के समान समझेंगे तो स्वतः नारी सम्मान और सुरक्षा हमारे लिए सर्वोपरि होगा। उसी प्रकार अगर हम दूसरे के धन को ढेले की तरह समझेंगे तो हम लोभ-लालच से दूर हो जाएँगे तथा चोरी और छल कपट से दूसरे का धन हड़पने की चेष्टा नहीं करेंगे और साथ ही सभी जीवों को अपनी तरह मानने की बात है तो इसका सीधा अर्थ है कि सभी जीवों पर दया करना और उनका दुःख-दर्द समझना और उन पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करना ही हमारा धर्म है।

(iii) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमण्ते तत्र देवता: ।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया: ॥

यह श्लोक मनुस्मृति के अध्याय 3 का श्लोक सं 56 है जिसका तात्पर्य है कि जहाँ नारियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ उनकी पूजा नहीं होती वहाँ की जाने वाली सभी क्रियाएँ निष्फल होती हैं। इसका तात्पर्य यह है कि जहाँ नारियों का आदर सम्मान होता है वहाँ सभी का कल्याण होता है। सर्वत्र सफलता प्राप्त होती है जबकि नारियों का अनादर और उन पर अत्याचार करने से समाज के समस्त कार्य व्यर्थ और निष्फल हो जाते हैं। यहाँ ध्यान देने की बात यह है कि सनातन दर्शन में नारियों के प्रति कितना सम्मानजनक भाव प्रदर्शित किया गया है।

(iv) सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दु:ख भाग भवेत् ।।

उक्त श्लोक सनातन संस्कृति की सर्वकल्याणकारी विचारधारा का अनुपम उदाहरण है। इसमें सभी के सुखी होने और निरोगी होने, सभी के शुभ के साक्षी बनने एवं किसी को कोई दु:ख प्राप्त ना हो की कामना की गई है। मनुष्यों के बीच किसी तरह की विभेदकारी रेखा नहीं खींची गई है। यहाँ सब ईश्वर की संतान हैं, यहाँ कोई छोटा-बड़ा, ऊँचा-नीचा नहीं है। अर्थात् सभी परमात्मा की संतान हैं और सबका सुख-सुविधा-आरोग्य और जीवन पर समान अधिकार है।

उपर्युक्त श्लोकों से यह स्पष्ट होता है कि हमारी सनातन संस्कृति विश्व बंधुत्व, सर्वकल्याण, परोपकार, समानता एवं उदारता की भावना से परिपूर्ण है जो इसके मानवतावादी दृष्टिकोण को दर्शाती है। इसमें मानवीय मूल्यों को सहजने एवं चरित्र विकास करने के गुण समाहित है।

अत: उपर्युक्त के आधार पर हम कह सकते है कि सनातन संस्कृति विश्व की सर्वोत्तम संस्कृतियों में से एक है जिसे अपनाकर हम अपना एवं समस्त विश्व का कल्याण कर सकते हैं।

श्री आशुतोष प्रसाद प्रतिहारी

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी

मूल रचना - श्री मनोज दास

बाघ

(किसी एक भाषा का चरित्र और सौकूमाल (लचीलापन) किसी अन्य भाषा में पूर्णत: प्रतिबिंबित करना असंभव है)

पहाड़ो से निकलने के बाद बहुत सारे जंगली जानवरों की प्यास बुझाते हुए सघन जंगल और उसके बाद पथरीलें इलाकों को पार करते हुए जहाँ से एक नदी मनुष्य को दिखाई पड़ती है वह जगह फ़िलहाल एक उपनिवेश (बस्ती) है जिसमें छोटे बड़े इंजिनियर, 50 तक लिपिक और लगभग 100 श्रमिक रहते हैं। यह सच है नदी वहाँ से दिखाई तो देती है लेकिन दोपहर में दो तीन घंटो को छोड़कर बाकी समय लगता है कि वह कोहरे के आँचल के पीछे छुपी हुई है।

पहाड़ो के उपरी क्षेत्रों में जबरदस्त वारिश हुई है। नदी में भीषण बाढ़ आई है। सूर्यास्त से पहले श्रमिक बस्ती के बहुत सारे बच्चे नदी के किनारे बाघ– बाघ शोर मचाते हुए दौड़ रहे थे और मनोरंजन क्लब के गेट के पास खड़ा होकर चपरासी ने बोला– साहब जी नदी में बाघ-

क्या ?

“ बाघ क्या मगरमच्छ है जो नदी में तेरने लगा - बेवकूफ कहीं का”

चीफ इंजीनियर शतरंज बोर्ड के ऊपर से मुहँ उठाकर बोला “महोदय कभी-कभी बाघ का पैर फिसल जाने से, वह पहाड़ से गिरकर नदी में आ जाता है।”

“Good heavens”!

चीफ, उप चीफ, प्रशासनिक अधिकारी और श्रमिक नेता, सभी शतरंज छोड़कर नदी के बाघ के ऊपर बात करने लगे ! सचमुच नदी में एक बाघ का मुँह दिखाई पड़ता था ! लेकिन घने कोहरे की वजह से उसका आकार पता नहीं चलता था।

“दौड़ कर जाओ और मेरे बंगले से बंदूक लेकर आओ, जल्दी जाओ” चीफ ने प्रशासनिक अधिकारी को आदेश दिया।

पूरे इलाके में खलबली मच गई ! बंदूक आने की समयावधि में सभी लोग उनके बच्चों के साथ नदी के किनारे इकठ्ठा हो गए।

बाघ तैर रहा था, उसको निशाना लगाते हुए, चीफ, नदी के किनारे-किनारे आगे बढ़ रहे थे। कोहरा अधिक घाना होता जा रहा है। जहाँ नदी ने मोड़ लिया और ढेर सारी झाडियां नदी के अंदर झुकी हुईं थीं वहीँ पर बाघ ऊपर उठने की कोशिश कर रहा था। बाघ और नदी के किनारे के बीच की दूरी जितना कम हो रही थी, जनता/आमजन उतने ही पीछे हट रहे थे।

चीफ ने यह भी महसूस किया कि श्रमिक नेता भी पीछे हट रहे है।

अचानक चीफ के अंदर भी एक आतंक (डर) आया। अगर बाघ किनारे पहुच गया तो सब अनर्थ हो जाएगा। तभी नजदीक से उप चीफ चिल्लाया –

“फायर सर फायर”

और चीफ ने बाघ के कपाल पर निशाना साधते हुए बंदूक का ट्रिगर दो बार दवाया।

भीड़ ने अति उत्साह के साथ साहब का जय घोष किया।

कोहरा और बारूद के धुएं के सम्मिश्रण से कुछ देर तक बाघ के अस्तित्व का पता ही नहीं चला।

पर ये क्या धुआँ उड़ जाने के बाद भी बाघ का पता नहीं !

भीड़ खामोश !

10-15 मिनट के बाद - ऐसा लगा कि झाड़ियों के अंदर कुछ हलचल हो रही थी।

मतलब बाघ ऊपर आ गया।

अंधकार और आतंक।

भीड़ और सभी अधिकारी घर इस आशा के साथ लौटे कि यह घर नहीं किसी गुफा/ सांप के बिल में प्रवेश कर रहे है।

लौटने के दौरान चीफ बार-बार पीछे मुडकर देख रहे थे, बाघ के लिए उन्हें इतना डर नहीं था बल्कि डर था बाघ के संभाव्य प्रश्न के लिए। अगर बाघ झाड़ियों से निकलकर पूछ लेगा

"शर्म नहीं जब मैं डूब रहा था, तुमने मुझ पर गोली चलाई, यह तुम्हारी बहादुरी है, अभी आकर मारो मैं देखता हूँ, कैसा बैरल से शून्य/ हवा में ज्यामिति बना रहे हो"

रात करीब 12 बजे चीफ पी रहे थे और सोच रहे थे, वास्तव में जीवन में बार-बार ऐसा ही किया है।

विपक्ष जब भी असाध्य था उसी समय में ही उनको मात/ शिकस्त दिया। प्रेम और पदोन्नति में

जैसा- यह रात में बाघ ने उनको नजरंदाज करके किनारे उठ गया। अगले छण चीफ फिर सचेत हो गए, अरे नहीं - श्रीमती एक बाघधारी कपडा (गाउन) पहनकर सो रही है। अगर बाघ होगा तो बाहर ही होगा। खिड़की के उस पार अंधकार में।

चीफ ने बाहर देखा और चिल्लाया –

"आह् ! आह् !"

हाथ से गिलास गिरकर चकनाचूर हो गया।

श्रीमती जी को नींद आ गई थी, अचानक उठकर, साहब को जकड़ लिया और पूछने लगी

"क्या हुआ! क्या हुआ! "

"बाघ"

"गया किधर"

चीफ ने बगीचे के अंधकार की तरफ इशारा किया।

बगीचे के पास

उप चीफ का बंगला।

उप चीफ श्री संपत पी रहे थे और सोच रहे थे।

वह स्वयं एक अचूक शिकारी है।

यह बात स्वयं चीफ को पता है फिर भी उनको मौका ना देकर चीफ ने स्वयं गोली चलाई।

"खतरनाक"

क्योंकि वो चीफ है इसलिए अधीनस्थों की प्रतिभा को दबाकर रखेंगे।

अचानक उनकी कल्पना में चीफ का मुहँ बड़ा होने लगा।

वह आतंकित महसूस करने लगे। पी हुई अवस्था में अगर उन्हे कोई चीज बड़ी दिखाई देने लगती तो वह बड़ी से और बड़ी होती जा रही थी।

हैलो- हैलो, मिस्टर संपत, मैं, श्रीमती चीफ बोल रही हूँ

बाघ तुम्हारे बगीचे की ओर चला गया है। रात में तुम्हें परेशान किया इसके लिए क्षमा।

"आई-सी , ओह यस, यह जा रहा है।"

प्रशासनिक अधिकारी श्री बनबन पी रहे थे और सोच रहे थे। आज सबके सामने, चीफ ने, मुझे अपने बंगले से बंदूक लाने को कहा - यह बहुत ही खतरनाक बात है। थोड़ी सी उत्तेजना में चीफ कितना विवेकहीन हो सकते है।

बंदूक के लिए, चपरासी को बोल सकते है।

कल जूते लाने के लिए नहीं बोलेंगे, इसकी क्या गारंटी है।

पी हुई अवस्था में, श्री बनबन को प्रतिहिंसामूलक /हिंसक कार्यवाही की कल्पना करना अच्छा लगता है।

वह सोच रहे थे अभी वह बाघ हर गेट के सामने नेमप्लेट/ नामपट्ट को ध्यान से पढ़ रहा है।

"अरे यह तो चीफ का बंगला है !"

बाघ अपने मुहँ को फेरते हुए बंगले में प्रवेश करता है। मुस्कुराते हुए मिस्टर बनबन ने बाघ को उकसाया –

" देखो चीफ बैठा हुआ है, शराब पी रहा है उसकी गर्दन को पकड़ो,

ऐसे नहीं,वेसे –दो एक थप्पड़,

हा हा हा-

"मेरे से जूते मंगवायेगा"

मिस्टर बनबन अपने गाल पर एक थप्पड़ मारा

"हैलो हैलो मिस्टर बनबन, मैं संपत ! बाघ तुम्हारे घर के पीछे घुस गया है।

"फॉर योर इन्फोर्मेशन"

"स....स...स.....सच.....सचमुच"

श्रमिक नेता श्री साहू नहीं पी रहे थे,

कुछ सोच भी नहीं रहे थे।

बंदूक पकड़ते हुए चीफ का व्यक्तित्व का असर श्रमिक समाज के ऊपर कितना प्रभावित किया होगा यही सोचते हुए – और उसके बाद उनकी बंदूक से बाघ का निधन न होने पर, थोड़ा सा आशस्वत होकर (अवचेतन /तंद्रामग्न अवस्था में वह स्वप्न देख रहे थे

"लंगोटी पहन कर वह स्वयं बाघ के साथ लड़ रहे थे, चारों दिशा से श्रमिक समाज श्रद्धा और भय से देख रहा है।

उसके बाद वह बाघ को पलट दिया और तालियों की गड़गड़ाहट गूंजी उठी।

भागते हुए बाघ ने भी प्रशंसा पूर्वक आँखों से देखा और ताली बजाई।

उसके बाद स्वयं को नेता समझ कर वह स्लोगन दिया

"बाघ से हमको बचाया किसने"

जनता ने बोला साहू-साहू-साहू

"कम से कम उप मंत्री होने के योग्य कौन"

साहू-साहू-साहू

साहू कौन ?

हमारे प्रिय नेता जिसने हमें बाघ से बचाया।

हैलो हैलो में बनबन बोल रहा हूँ

सुनिए मिस्टर साहू जहा तक याद है बाघ आपके परिसर में घुस गया।

अब में क्या करूँ"

काँपते हुए श्रमिक नेता श्री साहू ने माइक एम्पलीफायर को श्रमिक बस्ती की और मोड़ दिया और बोला –भाइयों मैं आपका नेता साहू बोल रहा हूँ, आज नदी में तैरता हुआ बाघ, हमारे आँखों के सामने टहल रहा है। बस्ती के अंदर भी जा सकता है। आपकी सुरक्षा का प्रबंध मैं कर रहा हूँ। मुझे पता है, मैं ही बाघ का लक्ष्य हूँ, मर जाऊंगा लेकिन मेरी यूनियन का एक भी सदस्य का बाल भी बांका नहीं होने दूंगा। अब साहू जी फिर से काँपने लगे।

श्रमिक बस्ती के प्रत्येक घर में रात के अंधकार में रौशनी फ़ैल गई।

पूरे गाँव में सन्नाटा छा गया।

****

"साहब, बाघ अभी तक पानी में है जहाँ नदी के किनारे झाड़ियाँ नदी की तरफ झुकी हुई है। बाघ बीमार था, शायद भूख से मर गया। सुबह –चपरासी ने कहा।"

"सचमुच ?"

हा-हा-हा चीफ हसने लगा।

हाँ साहब।

और कल रात में जो बाघ को देखा वह बहुत चतुर था। कहीं भी उसके पैरो के निशान छोड़कर नहीं गया।

"ओह ,हा,हा –सच में"।

"हाँ साहब –वहाँ ऐसा बाघ नहीं था क्योंकि एक भी कुत्ता भोंका नहीं"

"हा,हा,हा - चीफ ने तीसरे कप चाय की चुस्की लेना शुरू किया।

श्री गिरराज शरण अग्रवाल
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

राजभाषा कार्यान्वयन में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों का योगदान

14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राजभाषा घोषित करना, संविधान में अनुच्छेद 343 से 351 तक के प्रावधान, तत्पश्चात समय समय पर राष्ट्रपति महोदय के आदेश, राजभाषा आयोग, राजभाषा संसदीय समिति, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा संकल्प 1968, वार्षिक कार्यक्रम, 1975 में राजभाषा विभाग का गठन, राजभाषा नियम 1976, केंद्रीय हिंदी समिति, हिंदी सलाहकार समिति, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हिंदी शिक्षण योजना, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना, इसके अतिरिक्त समय समय पर राजभाषा से संबंधित आदेशों ने केंद्र सरकार के मंत्रालयों, कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, स्वायत्त निकायों में राजभाषा कार्यान्वयन को नए आयामों तक पहुंचाया है।

इसी श्रृंखला में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की प्रेरणा एवं केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के मार्गदर्शन में गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में अभिनव पहल करते हुए वर्ष 2021 से अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन करने का निर्णय लिया।

राजभाषा विभाग द्वारा अभी तक आयोजित किए गए चारों अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेनों का विवरण निम्नानुसार है:

प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन

प्रथम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन दिनांक 13-14 नवंबर 2021 को उत्तर प्रदेश के वाराणसी शहर में आयोजित किया गया।

इस सम्मलेन का उद्घाटन दिनांक 13 नवंबर 2021 को केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने किया था। इस सम्मलेन में माननीय गृह मंत्री के अतिरिक्त प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति सहित पूरे देश से आये विद्वानगण उपस्थित रहे। इस अवसर पर गृहमंत्री अमित शाह एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन वाराणसी की स्मारिका का भी विमोचन किया

दो दिन के इस सम्मलेन के विभिन्न सत्रों में विषय विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा हिंदी के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि हमारा यह संकल्प होना चाहिये कि हिंदी का वैश्विक स्वरुप हो। उन्होंने कहा कि स्थानीय भाषा राजभाषा की पूरक है। अतः राजभाषा विभाग की जिम्मेदारी है कि वह स्थानीय भाषा का भी विकास करे। उन्होंने अभिभावकों से अनुरोध किया कि वे अपने बच्चो से हिंदी में या अपनी स्थानीय भाषा में ही बात करें। उन्होंने युवाओं से अपील करते हुए कहा कि वें हिंदी बोलने में गर्व का अनुभव करें।

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन दिनांक 14-15 सितम्बर 2022

द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन दिनांक 14-15 सितम्बर 2022 को गुजरात राज्य के सूरत शहर के पंडित दीनदयाल उपाध्याय इंडोर स्टेडियम में आयोजित किया गया। माननीय केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के मुख्य आथित्य में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ कार्यक्रम में देश भर के विभिन्न मंत्रालयों कार्यालयों सार्वजानिक उपक्रम बैंक के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने लगभग 9000 की संख्या में उपस्थित हुए।

इस शुभावसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि माननीय अमित शाह जी ने हिंदी वृहद शब्दकोष हिंदी शब्द सिंधु संस्करण-1 तथा विश्वस्तरीय अनुवाद टूल कंठस्थ 2.0 का भी लोकार्पण किया।

माननीय मुख्यमंत्री गुजरात राज्यमंत्री महोदय गृह मंत्रालय संसदीय समिति राजभाषा के सदस्यों, मंत्रीगणों, सांसदगणों, वरिष्ठ अधिकारियों, शिक्षाविदों पत्रकारों, पद्मश्री प्रसुन जोशी, अभिनेता पंकज त्रिपाठी समेत अन्य कई फ़िल्म जगत की जानी मानी हस्तियों ने भी इस विशाल कार्यक्रम में अपने उद्बोधनो से हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डाला।

तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन दिनांक 14-15 सितम्बर, 2023

यह सम्मेलन दिनांक 14-15 सितम्बर 2023 को श्री शिव छत्रपति स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, पुणे महाराष्ट्र में संपन्न हुआ

इस समारोह में उप सभापति राज्यसभा श्री हरिवंश जी, गृह राज्य मंत्री श्री अजय मिश्रा जी, एम.एस.एम.ई राज्य मंत्री श्री भानु प्रताप वर्मा जी, माननीय उपाध्यक्ष संसदीय राजभाषा समिति श्री भृतहरि महताब जी, अभिनेता श्री आशुतोष राणा जी, फिल्म निर्माता और निर्देशक श्री चंद्र प्रकाश द्विवेदी वरिष्ठ अधिकाररियो, शिक्षाविदों, पत्रकारों सहित जानी मानी हस्तियों ने भी इस विशाल कार्यक्रम में अपने उद्बोधनो से राजभाषा हिंदी के प्रचार और प्रसार पर बल दिया।

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सममेलन दिनांक 14-15 सितम्बर, 2024

चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन वर्ष 2024 में नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में आयोजित किया गया। यह सम्मेलन विशेष के रूप में स्मरणीय रहेगा क्योंकि यह राजभाषा हिंदी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर राजभाषा हीरक जयंती समारोह भी था। हिंदी के राजभाषा बनने की 75 वर्ष की यात्रा ने न केवल कई महत्वपूर्ण पड़ाव पार किए हैं, बल्कि तकनीक के क्षेत्र में उत्तरोत्तर प्रगति भी की है।

इस अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह हीरक जयंती को यादगार बनाने के लिए एक स्मारक डाक टिकट और स्मारक सिक्के का लोकार्पण भी किया। साथ ही, हिंदी के साथ भारतीय भाषाओं के प्रयोग को बढ़ावा देने और उनके बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने के उद्देश्य से, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने सम्मेलन में भारतीय भाषा अनुभाग की स्थापना की घोषणा की गई।

सम्मेलन के पहले दिन उद्घाटन सत्र एवं पुरस्कार वितरण के बाद 'राजभाषा हीरक जयंती- 75 वर्षों में राजभाषा, जनभाषा और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की प्रगति' पर विचार विमर्श हुआ। दूसरे सत्र में 'भारत की सांस्कृतिक विरासत और हिंदी' पर परिचर्चा हुई जिसमें लोकप्रिय हिंदी कवि एवं व्याख्याता डॉ. कुमार विश्वास उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त अन्य सत्रों विभिन्न विषयों पर विशिष्ट विषय विशेषज्ञों ने सभागार को सम्बोधित किया। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में केंद्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल तथा अंतिम सत्र 'हिंदी भाषा के विकास का सशक्त माध्यम भारतीय सिनेमा' को प्रसिद्ध अभिनेता अनुपम खेर और जाने माने फिल्म निर्माता एवं निर्देशक चंद्रप्रकाश द्विवेदी द्वारा संबोधित किया गया।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग द्वारा पिछले चार वर्षों से लगातार भारत के अलग-अलग शहरों में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेनों नामक हिंदी महाकुंभ का आयोजन किया जा रहा है जिसमें सम्पूर्ण भारत के सभी

मंत्रलाय के सचिव, विभिन्न बैंकों और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों के मुख्य कार्यपालक अधिकारी, विभिन्न विभागाध्यक्ष, कार्यालयध्यक्ष, राजभाषा अधिकारी, अनुवाद अधिकारी, हिंदी भाषा, साहित्य, कला, शिक्षण, सिनेमा के विद्वान एवं अन्य हिंदी सेवी सहित लगभग 10000 लोग भाग ले रहे हैं। इन सम्मेलनों में साझा की गई नई जानकारियां, राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में विकसित किए जा रहे नए तकनीकी टूल्स ने राजभाषा कार्यान्वयन को एक नई गति प्रदान की है। साथ ही इन सम्मेलनों ने समस्त हिंदी सेवियों को अपने अपने कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन में आ रही कठिनाईयों को दूर करने हेतु विचार विमर्श, अपने अनुभवों को साझा करने हेतु एक संयुक्त मंच प्रदान किया है।

इसके अतिरिक्त अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेनो में राजभाषा विभाग के मुखिया माननीय गृह मंत्री स्वयं विभिन्न मंत्रालयों, विभागो, बैंकों आदि को राजभाषा कीर्ति पुंरस्कर एवं राजभाषा गौरव पुरस्कार प्रदान कर सममानित करते हैं एवं अपने संबोधन से राजभाषा सेवियों का मार्गदर्शन भी करते हैं। इससे पुरस्कृत कार्यालय एवं भारत वर्ष के अन्य मंत्रालयों/कार्यालयों से सम्मेलन में पधारे हिंदी सेवियों को भी प्रेरणा मिलती है जिससे स्वाभाविक रूप से राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन को स्वत: ही नई गति एवं उर्जा प्राप्त हो रही है।

श्री पुरुषोत्तम गिरि

वरिष्ठ अनुवादक,

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

भारतीय हस्तशिल्प की प्रतिष्ठा ओडिशा की "तारकशी"

ओडिशा की "तारकशी" एक विशेष प्रकार की पारंपरिक धातु शिल्पकला है जो मुख्य रूप से कटक शहर में प्रचलित है। इसे "कटक फिलिग्री" (Cuttack Filigree) के नाम से भी जाना जाता है। इस कला में मुख्य रूप से चांदी के तारों का उपयोग किया जाता है जिन्हें जटिल और महीन डिज़ाइन में बुना या मोड़ा जाता है।

विशेषताएँ :

ओडिशा की तारकशी की कला न केवल अपनी शिल्प कौशल के लिए प्रसिद्ध है बल्कि इसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व के कारण भी इसकी अलग पहचान है। ओडिशा की तारकशी कला के और भी पहलू हैं जो इसे अद्वितीय बनाते हैं और साथ ही साथ जो इस शिल्पकला की गहराई, सुंदरता और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाते हैं:

1. सांस्कृतिक महत्त्व :

ओडिशा की तारकशी न केवल गहनों और आभूषणों तक सीमित है बल्कि यह ओडिशा की सांस्कृतिक विरासत और धार्मिक अनुष्ठानों का भी अभिन्न अंग है। कटक की दुर्गा पूजा में, देवी दुर्गा के आभूषणों और सजावट में तारकशी का व्यापक उपयोग किया जाता है। यह कला मंदिरों के गहनों और पूजा की अन्य सामग्रियों में भी देखी जाती है।

2. कारीगरों का कौशल :

इस कला के कारीगर अत्यधिक कुशल होते हैं और उन्हें पीढ़ियों से यह शिल्पकला सिखाई जाती है। परिवारों के भीतर पारंपरिक रूप से इस कला का ज्ञान हस्तांतरित होता है जिससे यह सुनिश्चित होता है कि कला की बारीकियां और तकनीकी विशिष्टता जीवित रहे। चांदी के तारों के साथ काम करते समय धैर्य, एकाग्रता और सटीकता की अत्यधिक आवश्यकता होती है क्योंकि छोटी सी गलती भी डिज़ाइन को प्रभावित कर सकती है।

3. तकनीक और प्रक्रियाएँ :

तारकशी बनाने की प्रक्रिया बेहद जटिल और श्रमसाध्य होती है। यह प्रक्रिया आमतौर पर निम्नलिखित चरणों में की जाती है: डिज़ाइनिंग: कारीगर पहले एक कागज पर डिज़ाइन तैयार करते हैं जिसमें हर छोटे विवरण को ध्यान में रखा जाता है। धातु का चयन और तैयारी: चांदी या अन्य धातुओं के तार चुने जाते हैं। धातु को गरम कर के पतले तार में परिवर्तित किया जाता है। मोल्डिंग और शिल्पकारी: पतले तारों को डिज़ाइन के अनुसार मोड़ा और काटा जाता है। ये तार नाज़ुक रूप से सोल्डर किए जाते हैं ताकि वे एक साथ जुड़े रहें। समापन और पॉलिशिंग: तैयार उत्पाद को चिकना और चमकदार बनाने के लिए पॉलिश किया जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि तैयार गहना या सजावटी वस्तु सुंदर और आकर्षक दिखाई दे।

4. संस्कृति और त्यौहारों में भूमिका :

ओडिशा की संस्कृति में विशेष रूप से कटक की संस्कृति में तारकशी का एक विशेष स्थान है। दुर्गा पूजा, रथ यात्रा और अन्य धार्मिक व सांस्कृतिक आयोजनों में इस कला का उपयोग

देवी-देवताओं की सजावट और मूर्तियों के निर्माण में किया जाता है। यह कला इन त्यौहारों को और भी आकर्षक और जीवंत बनाती है।

5. पर्यटन और हस्तशिल्प मेलों में योगदान :

तारकशी कला ओडिशा में आने वाले पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र होती है। कई हस्तशिल्प मेले जैसे कि "तोषाली नेशनल क्राफ्ट्स मेला" और "कटक सिल्वर फिलिग्री मेला," इस कला को प्रोत्साहित करते हैं और शिल्पकारों को अपनी कला को प्रदर्शित करने और बेचने का अवसर देते हैं।

6. अंतरराष्ट्रीय पहचान :

ओडिशा की तारकशी केवल भारत में ही नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराही जाती है। इस कला को विभिन्न अंतरराष्ट्रीय हस्तशिल्प मेलों और प्रदर्शनियों में प्रदर्शित किया जाता है। कई विदेशी पर्यटक और कला-प्रेमी ओडिशा की इस कला को संग्रहणीय वस्तु के रूप में खरीदते हैं जिससे इसकी वैश्विक पहचान और भी मजबूत होती है।

7. डिज़ाइन की विविधता :

ओडिशा की तारकशी में कई प्रकार के डिज़ाइन और शैलियाँ हैं जो इसे अन्य शिल्पकलाओं से अलग बनाती हैं: जालीदार डिज़ाइन: बारीक तारों से बने जाली के डिज़ाइन, जो हल्के और नाजुक होते हैं लेकिन दिखने में बहुत भव्य होते हैं। संवर्धित आकृतियाँ: जानवरों, पक्षियों, फूलों और पत्तियों के आकारों में बनाए गए डिज़ाइन जो पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रकार के आभूषणों में इस्तेमाल होते हैं। धार्मिक और पौराणिक थीम: कई डिज़ाइन हिंदू देवी-देवताओं, धार्मिक प्रतीकों और पौराणिक कथाओं से प्रेरित होते हैं जो भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक भावना को दर्शाते हैं।

8. सामग्री की गुणवत्ता और शुद्धता :

इस कला में इस्तेमाल होने वाली सामग्री की गुणवत्ता और शुद्धता को बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है। परंपरागत रूप से 92.5% शुद्धता की चांदी का उपयोग किया जाता है जिसे "स्टर्लिंग सिल्वर" के नाम से जाना जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि उत्पाद टिकाऊ, सुंदर और आकर्षक रहें।

9. फ्यूज़न शैलियाँ :

वर्तमान में ओडिशा के कारीगर पारंपरिक तारकशी में आधुनिक डिज़ाइन और शैलियों का समावेश कर रहे हैं। यह फ्यूज़न डिज़ाइन नए ग्राहकों, खासकर युवा पीढ़ी के बीच बहुत लोकप्रिय हो रहे हैं। यह प्रयास कला को प्रासंगिक बनाए रखने और इसके बाजार को विस्तारित करने के लिए किया जा रहा है।

10. कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम :

तारकशी न केवल एक शिल्पकला है, बल्कि यह कारीगरों के लिए अपनी भावनाओं और सांस्कृतिक विचारों को व्यक्त करने का एक माध्यम भी है। कारीगर अपनी व्यक्तिगत कहानियों, अनुभवों और भावनाओं को डिज़ाइनों के माध्यम से दर्शाते हैं।

11. पर्यावरण के प्रति जागरूकता :

कुछ कारीगर अब पर्यावरण के प्रति जागरूकता दिखाते हुए चांदी के साथ अन्य पर्यावरण- मैत्री धातुओं का उपयोग भी कर रहे हैं। इसके साथ ही वे उत्पादन प्रक्रिया में पर्यावरणीय स्थिरता का भी ध्यान रख रहे हैं।

12. स्थानिक पहचान और विविधता :

ओडिशा में तारकशी की कारीगरी मुख्य रूप से कटक शहर से जुड़ी हुई है जिसे "सिल्वर सिटी" भी कहा जाता है। कटक में इस कला के कई शिल्पकार परिवार पीढ़ियों से इस काम में लगे हुए हैं। हालांकि राज्य के अन्य हिस्सों में भी कुछ शिल्पकार इस कला को जीवित रखे हुए हैं। हर क्षेत्र की तारकशी की अपनी विशिष्टता और शैली होती है जिससे ओडिशा की सांस्कृतिक विविधता का पता चलता है।

13. शिल्प मेलों और प्रदर्शनियों में सहभागिता :

तारकशी के कारीगर नियमित रूप से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेलों, प्रदर्शनियों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। इससे उन्हें अपने शिल्पकला का प्रदर्शन करने और बड़े बाजार तक पहुँचने का अवसर मिलता है। "सुरजकुंड मेला" और "द इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेयर" जैसे आयोजनों में ओडिशा के तारकशी उत्पादों की मांग और प्रशंसा होती है।

14. कला के संरक्षण के लिए नीतियाँ :

ओडिशा सरकार ने कारीगरों के उत्थान के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं जैसे कि क्राफ्ट विलेज: ओडिशा सरकार ने "क्राफ्ट विलेज" परियोजना की शुरुआत की है जहाँ पर्यटक और स्थानीय लोग कारीगरों के काम को देख सकते हैं और उनसे सीधे आभूषण और सजावटी सामान खरीद सकते हैं। स्किल

डेवलपमेंट प्रोग्राम: कारीगरों को नई तकनीकों, डिज़ाइन की शिक्षा और बाजार की जानकारी के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं।

15. नई तकनीकों के साथ सामंजस्य :

तारकशी कला की एक खूबी यह भी है कि यह कारीगरों को नई तकनीकों के साथ सामंजस्य बैठाने की अनुमति देती है। जबकि मूल शिल्पकारी और डिज़ाइन पारंपरिक रूप से हाथ से बनाई जाती है। आज के कारीगर कंप्यूटर-आधारित डिज़ाइन टूल्स का भी उपयोग कर रहे हैं। यह उनके काम को और भी सटीक और आकर्षक बनाता है, साथ ही नए और अनोखे डिज़ाइन भी संभव बनाता है।

16. ग्लोबल मार्केटिंग और ब्रांडिंग :

तारकशी के उत्पादों की वैश्विक बाजार में मांग को देखते हुए ओडिशा के कारीगर और उद्यमी अब इसे ब्रांडिंग और मार्केटिंग के माध्यम से विश्व स्तर पर प्रमोट कर रहे हैं। वे सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म, ई-कॉमर्स वेबसाइट और अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों के माध्यम से अपने उत्पादों की मार्केटिंग कर रहे हैं। यह प्रयास उन्हें व्यापक दर्शकों तक पहुँचाने में मदद कर रहा है और उनकी आय में वृद्धि कर रहा है।

17. हस्तशिल्प विरासत के रूप में तारकशी :

ओडिशा की तारकशी को भारत की समृद्ध हस्तशिल्प विरासत का एक अभिन्न हिस्सा माना जाता है। भारतीय हस्तशिल्प उद्योग में इसे एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है और इसे जीआई (Geographical Indication) टैग मिलने की प्रक्रिया चल रही है जो इसकी विशिष्टता और गुणवत्ता की पहचान को संरक्षित करने में मदद करेगा।

18. संस्कृति के प्रतीक के रूप में आभूषण:

तारकशी आभूषण सिर्फ गहने नहीं होते; वे संस्कृति, परंपरा और परिवार की धरोहर का प्रतीक भी होते हैं। कई बार ये गहने पीढ़ियों से विरासत में दिए जाते हैं जो परिवार के इतिहास और परंपराओं को दर्शाते हैं।

19. रोजगार के अवसरों में वृद्धि :

तारकशी उद्योग ने ओडिशा में हजारों लोगों को रोजगार प्रदान किया है खासकर महिलाओं और युवाओं को। यह कला हस्तशिल्प केंद्रों, प्रशिक्षण संस्थानों और स्थानीय संगठनों के माध्यम से रोजगार के अवसर पैदा करती है। इसके अतिरिक्त इससे जुड़े सप्लाई चेन जैसे चांदी की आपूर्ति, मार्केटिंग और परिवहन में भी कई लोगों को रोजगार मिलता है।

20. डिज़ाइन विविधता और विस्तार :

तारकशी कला में डिज़ाइन की विविधता लगातार बढ़ रही है। पारंपरिक पैटर्न के साथ-साथ कारीगर अब आधुनिक और समकालीन डिज़ाइन भी बना रहे हैं जैसे कि फूलों के पैटर्न, ज्यामितीय आकृतियाँ और न्यूनतम (minimalist) डिज़ाइन। यह विविधता न केवल कला को समृद्ध बनाती है बल्कि इसे युवा पीढ़ी और अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों के लिए भी आकर्षक बनाती है।

21. प्रदर्शनी और अंतरराष्ट्रीय पहुंच :

ओडिशा की तारकशी को कई अंतरराष्ट्रीय कला और शिल्प प्रदर्शिनियों में भी शामिल किया गया है जिससे इसे विश्व स्तर पर पहचान मिली है। ये प्रदर्शनियाँ कारीगरों को अपनी कला को वैश्विक मंच पर प्रदर्शित करने का अवसर देती हैं और उन्हें नए बाज़ारों तक पहुंचने में मदद करती हैं।

22. शिल्प पर्यटन के लिए संभावनाएं :

ओडिशा में शिल्प पर्यटन के रूप में तारकशी का महत्वपूर्ण स्थान है। लोग कटक जैसे शहरों में आकर कारीगरों की कार्यशालाओं में जाते हैं जहाँ वे इस कला को सीख सकते हैं और खुद अनुभव कर सकते हैं कि यह कैसे बनाई जाती है। इससे न केवल पर्यटन को बढ़ावा मिलता है बल्कि कारीगरों को भी अतिरिक्त आय का स्रोत प्राप्त होता है।

23. तारकशी का डिजिटल आर्काइविंग :

तारकशी कला के संरक्षण के लिए डिजिटल आर्काइविंग एक महत्वपूर्ण पहल है। डिज़ाइन, तकनीकों और कारीगरों के जीवन से संबंधित डिजिटल दस्तावेज़ और वीडियो सामग्री को संरक्षित करने का काम किया जा रहा है। यह प्रयास न केवल कला के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है बल्कि यह दुनिया भर के कला प्रेमियों, शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए भी एक सुलभ स्रोत बनता जा रहा है।

24. अंतर-सांस्कृतिक संवाद का माध्यम :

तारकशी कला अंतर-सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने का एक माध्यम बन गई है। कई अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों और

कार्यशालाओं में कारीगर अपने अनुभवों और तकनीकों को साझा करते हैं और अन्य देशों के कलाकारों और शिल्पकारों के साथ संवाद स्थापित करते हैं। इससे दोनों पक्षों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता है और कला का विस्तार होता है।

25. ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमिता का विकास :

ओडिशा के ग्रामीण क्षेत्रों में तारकशी कला ने उद्यमिता के विकास में भी योगदान दिया है। कई युवा कारीगरों ने अपनी कार्यशालाएं और छोटे उद्यम स्थापित किए हैं जो उन्हें आत्मनिर्भर बनने और अपने समुदायों के आर्थिक विकास में योगदान देने का अवसर प्रदान करते हैं। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक गतिशीलता और स्थानीय व्यापार का विस्तार हुआ है।

26. महिलाओं के सशक्तिकरण में योगदान :

तारकशी कला ने ओडिशा में महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कई महिलाएं इस कला को सीखकर अपनी आजीविका कमा रही हैं जो उन्हें आत्मनिर्भर बनने और अपने परिवार के लिए आर्थिक सहयोग करने में सक्षम बनाती हैं। इसके अलावा यह कला महिलाओं को समाज में एक नया स्थान और पहचान दिलाती है।

27. डिजिटल और सोशल मीडिया का उपयोग :

आज के युग में तारकशी कारीगर डिजिटल प्लेटफार्मों और सोशल मीडिया का उपयोग अपने उत्पादों को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाने के लिए कर रहे हैं। इससे न केवल उनकी पहुँच बढ़ी है बल्कि उनके उत्पादों की मांग भी बढ़ी है। डिजिटल मार्केटिंग के माध्यम से कारीगर अपनी कला को सीधे उपभोक्ताओं तक पहुँचा रहे हैं जिससे उन्हें बेहतर मूल्य और पहचान मिल रही है।

28. शैक्षणिक और अनुसंधान संगठनों से सहयोग :

अनेक शैक्षणिक और अनुसंधान संस्थान जैसे कि राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान (NID) और राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (NIFT), ओडिशा की तारकशी कला के विकास और संवर्धन के लिए सहयोग कर रहे हैं। वे कारीगरों के लिए कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं जिससे कारीगरों को नई तकनीकों और डिज़ाइन के रुझानों से परिचित होने का मौका मिलता है।

29. स्थानीय समुदायों में कला की जागरूकता :

ओडिशा में स्थानीय समुदायों में तारकशी कला की जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। ये कार्यक्रम कला प्रेमियों, पर्यटकों और स्थानीय निवासियों के बीच इस शिल्प के महत्व को उजागर करते हैं और उन्हें इसे संरक्षित करने में मदद करने के लिए प्रेरित करते हैं।

30. मास मीडिया और डाक्यूमेंट्री फिल्में :

मास मीडिया और डाक्यूमेंट्री फिल्मों के माध्यम से तारकशी कला की कहानी को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाया जा रहा है। ये फिल्में और टीवी कार्यक्रम न केवल कारीगरों की मेहनत और कला की बारीकियों को दर्शाते हैं बल्कि उन्हें एक व्यापक दर्शक वर्ग से भी परिचित कराते हैं जो कला को समर्थन और सराहना प्रदान करता है।

निष्कर्ष :

ओडिशा की तारकशी एक जटिल, सुंदर और बहुमूल्य कला है जो राज्य की सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक पहचान का प्रतीक है। यह कला एक सुंदर और अत्यंत समृद्ध परंपरा है जो समय के साथ खुद को बदलती और विकसित करती रही है। इसके संरक्षण और संवर्धन के लिए किए जा रहे प्रयासों से यह कला न केवल जीवित रहेगी बल्कि नई ऊँचाइयों को भी छुएगी। यह कला हमें न केवल शिल्पकला की बारीकियों से परिचित कराती है बल्कि कारीगरों की मेहनत, लगन और रचनात्मकता का भी सम्मान करने का अवसर देती है। इसके संरक्षण, प्रोत्साहन और विकास के लिए किए जा रहे सभी प्रयास इस कला को आने वाले समय में और भी अधिक मजबूती और प्रतिष्ठा दिलाएंगे। यह कला न केवल कारीगरों की जीविका का साधन है बल्कि ओडिशा की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक धरोहर का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह कला न केवल ओडिशा के कारीगरों के लिए गर्व का प्रतीक है बल्कि यह विश्व स्तर पर भारतीय हस्तशिल्प की प्रतिष्ठा को भी ऊँचाई प्रदान करती है।

श्री राहुल कुमार वर्मा
कनि.अनुवादक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

हिंदी : भाषा से राजभाषा तक का सफर

भारत जो दुनिया की लगभग 6% आबादी का देश है और दुनिया की लगभग 2.4% भूमि पर स्थित है, अपनी भाषाई और सांस्कृतिक विविधता के लिए पूरे विश्व में जाना जाता है। यहाँ विश्व के लगभग हर धर्म के लोग रहते हैं। भारत एक बहुभाषी देश है जिसने 19,500 से अधिक भाषाओं और बोलियों को पोषित किया है, जिन्हें विभिन्न क्षेत्र, जाति और संप्रदाय के लोग मातृभाषा के रूप में प्रयोग में बोलतें है। भारत एक ऐसा देश है जो "विविधता में एकता" की अवधारणा को अच्छे तरीके से साबित करता है। "विविधता में एकता" भारत की शक्ति और मजबूती है जो आज एक महत्वपूर्ण गुण के रुप में भारत की पहचान करता है .. इस बहुभाषी देश को उसके विभिन्न क्षेत्रों एवं लोगो को एक जुट रखने के लिए हिंदी ने हमेशा अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हिंदी दीर्घकाल से अखंड भारत में जन-जन के पारस्परिक संपर्क की भाषा रही है। भक्तिकाल में अनेक संत कवियों ने हिंदी में साहित्य रचना की और लोगो का मार्गदर्शन किया। ना केवल उत्तरी भारत में ही बल्कि दक्षिण भारत के आचार्यों वल्लभाचार्य, रामानुज, रामानंद आदि ने भी इसी भाषा के माध्यम से अपने मतों का प्रचार-प्रसार किया। हिंदीतर भाषी राज्यों संत कवियों (जैसे- असम के शंकरदेव, महाराष्ट्र के ज्ञानेश्वर व नामदेव, गुजरात के नरसी मेहता,बंगाल के चैतन्य आदि) ने हिंदी को ही अपने धर्म और मत के प्रचार और साहित्य का माध्यम बनाया था। सिखों के पवित्रतम ग्रन्थ गुरु ग्रन्थ साहिब में अनेक संत कवियों के हिंदी काव्य संगृहीत हैं। हिंदी के प्रसिद्ध कवि भूषण,छत्रपति शिवाजी महाराज के राजकवि थे। 1816 ई. में विलियम केरी ने लिखा कि हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं,बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।

एक भाषा के रूप में अगर हिंदी भाषा की विकास यात्रा की बात करें तो यह एक लंबी और सतत प्रक्रिया है। हिंदी की यात्रा हिंदी की जननी भाषा संस्कृत जिसे आर्यभाषा या देवभाषा भी कहा जाता था, के विकास के साथ प्रारंभ होती है। कालांतर में पाणिनि द्वारा संस्कृत के स्वरुप को व्याकरणबद्ध करने के फलस्वरूप संस्कृत भाषा का प्रयोग शिक्षा, आयुर्वेद, योग तथा साहित्य की भाषा के रूप में तो हुआ लेकिन लोकभाषा में इसका प्रयोग लगातार घटने से संस्कृत पालि भाषा जो संस्कृत की तुलना में सरल और लोकप्रिय थी, का प्रयोग जनसाधारण में बढ़ने लगा, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश, अपभ्रंश से अवहट्ट, अवहट्ट से पुरानी हिंदी और पुरानी हिंदी से आधुनिक हिंदी का विकास हुआ है जिसे आज हम बोलते हैं।

हिंदी के इस सतत विकास को कुछ शब्दों के माध्यम से भी समझा जा सकता है। जैसे संस्कृत का 'मृतिका शब्द 'मिट्टिया' से 'माटी' में परिवर्तित होकर अन्त में हिंदी में 'मिट्टी' बना। इसी प्रकार संस्कृत शब्द 'कर्म' प्राकृत और अपभ्रंश काल में 'कम्म' हुआ और अंत में हिंदी में 'काम' में परिवर्तित हुआ। हालांकि इसे लेकर मतभेद है कि अपभ्रंश से हिंदी का विकास हुआ है या पुरानी हिंदी से। मगर वर्तमान भाषाविज्ञानी इसे अपभ्रंश से ही विकसित हुआ मानते है।

एक भाषा के विकास में उस समाज और संस्कृति की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है जहाँ पर ये बोली जाती है। हिंदी भाषा के विकास में भी समाज और संस्कृति की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है; खासकर उत्तर भारतीय राज्यों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण रही। हिंदी भाषा के विकास के कालखंड की बात करें तो यह तीन कालों में विकसित हुई इसी भाषा के विभिन्न काल खंडों में अलग-अलग स्वरूपों में हुए वियोजन से हिंदी का विकास हुआ है। सामान्य रूप से हिंदी का आरम्भ मुख्तय: 11 वी शताब्दी में माना जाता है। विभिन्न कालखंडो में हिंदी के विकास को निम्न प्रकार देखा जा सकता है :-

पहला कालखंड 1100 ईस्वी - 1350 ईस्वी का माना जाता है, इसे प्राचीन हिंदी का काल कहा जाता है। इस समय हिंदी पर प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओँ का अधिक प्रभाव था। दूसरा कालखंड मध्य काल (1350 ईस्वी - 1850 ईस्वी) कहा जाता है। इस काल में हिंदी भाषा पर व्रज और अवधी बोलियों का अवधी अधिक प्रभाव रहा तथा इन बोलियों में विपुल साहित्य रचा गया। तीसरा कालखंड 1850 ईस्वी से अब तक माना जाता है और इसे आधुनिक काल की संज्ञा दी जाती है। इस काल में हिंदी भाषा का स्वरूप बेहद तेजी से बदला है। इस काल में हिंदी पर अरवी, फ़ारसी, पुर्तगाली, अंग्रेजी, फ्रांसिसी भाषाओँ का प्रभाव देखने को मिला। हिंदी इस समय तक जन-जन की भाषा बन गई। ये वह दौर था जब आजादी की लड़ाई लड़ी जा रही थी और इस दौरान हिंदी का संपर्क भाषा के रूप में प्रचलन खूब बढ़ा। ये हिंदी भाषा का ही असर था कि उत्तर भारत ही नहीं दक्षिण भारत से भी आने वाले आजादी के नायकों ने इसे राष्ट्रभाषा के रूप मे स्वीकार किये जाने की पुरजोर वकालत की। हालांकि हिंदी भाषा को आज तक राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं मिल सका है।

1950 में भारतीय संविधान की आठवी अनुसूची में 14 भाषाओँ को जोड़ा गया था। इसमें हिंदी के अलावा असमिया, बंगाली, गुजराती, कन्नड़, मराठी, कश्मीरी, तेलुगु, तमिल, मलयालम, पंजाबी, उडिया, संस्कृत एवं उर्दू शामिल थी। इसके बाद इस सूची को तीन बार विस्तारित किया गया। पहली बार इसमें सिंधी भाषा को जोड़ा गया। दूसरी बार में इसमें कोंकणी, मणिपुरी एवं नेपाली भाषा को शामिल किया गया एवं तीसरी बार में इसमें डोगरी, संथाली, मैथली एवं बोडो भाषा को जोड़ा गया था। यह सभी भाषाएँ अब आधुनिक भारतीय भाषाएँ कही जाने लगी हैं।

महात्मा गांधी हिंदी भाषा से बहुत प्रेम करते थे एवं वे तो हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे। गाँधी जी ने हिंदी को राष्ट्रीय आंदोलनों की भाषा बनाया। 1917 में भरूच में गुजरात शैक्षिक सम्मेलन में अपने अध्यक्षीय भाषण में राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था कि भारतीय भाषाओं में केवल हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जा सकता है क्योंकि यह अधिकांश भारतीयों द्वारा बोली जाती है; यह समस्त भारत में आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक सम्पर्क माध्यम के रूप में प्रयोग के लिए सक्षम है तथा इसे सारे देश के लिए सीखना आवश्यक है।

यद्यपि भारत एक बहुभाषीय प्रदेश है। किन्तु बहुत लंबे काल से हिंदी या उसका कोई स्वरुप इसके बहुत बड़े भाग पर संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होता है जो आज भी जारी है। भक्तिकाल में उत्तर से दक्षिण तक, पूरब से पश्चिम तक अनेक संतो ने हिंदी में अपनी रचनाएँ लिखी। स्वतंत्रता आन्दोलन में हिंदी पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की इन सभी के साथ हिंदी भारत में सबसे ज्यादा बोली और समझे जाने वाली भाषा होना भी हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किये जाने का औचित्य स्थापित करता है।

हिंदी को भारत की राजभाषा माना गया है इसके कुछ महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित भी थे :

- हिंदी, भारत की सांस्कृतिक एकता और पहचान को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाती है। यह भारत की वाणी है और समस्त देश को एक सूत्र में बांधती है।
- हिंदी, दुनिया की सबसे ज़्यादा बोली जाने वाली तीसरी भाषा है। यह भारत के बाहर भी कई देशों में बोली जाती है।
- हिंदी, भारत के लोगों के बीच संवाद का सबसे बेहतरीन ज़रिया है।
- हिंदी, भारत के लोगों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक सेतु भी है।
- हिंदी के ज़रिए, भारत को दुनिया भर में सम्मान मिलता है।
- हिंदी, ज्ञान-विज्ञान की भाषा है। आजकल, विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिंदी में काम बढ़ाया जा रहा है।
- हिंदी, शिक्षा के क्षेत्र में भी अहम है। दुनिया भर के कई विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाती है।
- हिंदी, सरकारी कामकाज में ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल की जानी चाहिए। इससे विकास की गति तेज होगी और प्रशासन में पारदर्शिता आएगी।

राजभाषा, किसी देश या राज्य की वह भाषा होती है कि सभी राजकीय प्रयोजनों में प्रयोग में लाई जाती है। संविधान सभा ने लम्बी चर्चा के बाद 14 सितम्बर सन् 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। इस स्मृति को ताजा रखने

के लिए 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

इसके लिए 14 सितम्बर की शाम को संविधान सभा में हुई बहस के समापन के बाद जब संविधान का भाषा संबंधी भाग 14 (क) वर्तमान में भाग 17 संविधान का भाग बन गया के अनुच्छेद 343 से 351 तक राजभाषा संबंधी प्रावधान किये गए तथा देवनागरी लिपि को राजभाषा की लिपि के रूप में स्वीकार किया गया हिंदी को संघ की राजभाषा बनाए जाने का निर्णय संविधान सभा में एक मत से लिया गया क्योंकि उस समय भारत के 36 करोड़ लोगो में से 1 करोड़ लोग भी ऐसे नहीं थे जो अंग्रेजी में निपूण रहे हों। दूसरी बात यह भी थी कि जिस विदेशी शासन को हमने भारत से बाहर निकाल कर आजादी प्राप्त की थी उन्ही की भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने का कोई औचित्य नहीं था। डॉ राजेन्द्र प्रसाद ने अपने भाषाण में बधाई के शब्द कहे। उन्होंने कहा कि "आज ऐसा संविधान बना है जब हमने अपने संविधान में एक भाषा रखी है, जो संघ के प्रशासन की भाषा होगी। इस अध्याय का देश के निर्माण पर बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा"।

इस प्रकार हिंदी का भाषा से राजभाषा बनने तक का सफर पूर्ण हुआ और आज हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है। हिंदी कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और पुरी से लेकर सोमनाथ तक की संपर्क भाषा है। वर्तमान प्रधानमंत्री के विदेशो तथा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में संबोधन ने हिंदी व भारत के मान व गौरव को भी बढ़ाया है।

हिंदी सीमा तोड़कर, चली विश्व के द्वार,

वैज्ञानिक आधार पर, प्रसिद्धि मिली अपार।

****

श्री गुप्त प्रसाद मिश्र
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

हाथी: कोई नहीं साथी !

भारतीय संस्कृति में हाथी यानि गज का एक विशेष महत्व हे। प्राचीन कलिंग साम्राज्य जो कि आधुनिक समय में ओडिशा कहा जाता है, हाथी संस्कृति और समाज का एक अभिन्न अंग है। यही कारण है कि जहां प्राचीन काल के राजाओं को नरपति, भूपति, महीपति आदि कहा जाता था, वहीं ओडिशा के राजाओं को गजपति के रूप में वर्गीकृत किया गया था। हिंदू परंपरा में गणेश भगवान को अग्रपूज्य माना जाता है, जो हाथी का मुख धारण किये हुए है।

हमारे समाज और विशेष रूप से ओडिशा में हाथी के महत्व के बारे में एक मजबूत विवरण देने के बाद, कोई यह मान सकता है कि हम इस जानवर को बहुत अधिक महत्व और प्यार दे रहे हैं। लेकिन इसके विपरीत, हाल के दिनों में ओडिशा में हाथियों की कई मौतें हुई हैं, जिससे नागरिक समाज की भावनाएं आहत हुई हैं।

हाल ही में अखबारों की रिपोर्टिंग के अनुसार, राज्य ने 2023-24 में 66 हाथी मौतों की सूचना दी थी। इसी तरह, चालू वित्त वर्ष के दौरान 1 अप्रैल से 15 जुलाई के बीच साढ़े तीन महीनों में मरने वालों की संख्या 27 है। इसका मतलब है कि हम इस वित्तीय वर्ष में हर हफ्ते दो हाथियों को खो रहे हैं।

यह बताना उचित होगा कि 2019 से अब तक 392 हाथियों की मौत पिछले पांच वर्षों में हुई हैं, जिनमें से 137 मौतें अप्राकृतिक थीं और यह भारत के किसी भी राज्य के लिए सबसे अधिक है।

ये आँकड़े किसी भी ऐसे व्यक्ति को परेशान करने के लिए पर्याप्त हैं जो पारिस्थितिकी संतुलन के प्रति कम से कम जागरूक और चिंतित है। प्रशासन से अनुरोध है कि वह हमारे जंगलों में इन शानदार जानवरों की मौत को रोकने के लिए एक मजबूत निगरानी तंत्र स्थापित करे। इस संदर्भ में ऑडिट इस पहलू पर एक विशेष ऑडिट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। गहन जांच के बाद ऑडिट राज्य सरकार को हाथियों की सुरक्षा के लिए विभिन्न उपायों की सिफारिश कर सकता है। अगर समय रहते कार्रवाई नहीं की गई तो हमारी आने वाली पीढ़ी इस शानदार जानवर को उसके प्राकृतिक आवास में नहीं देख पाएगी और कई जानवरों की तरह यह भी जल्द ही विलुप्त हो जाएगा।

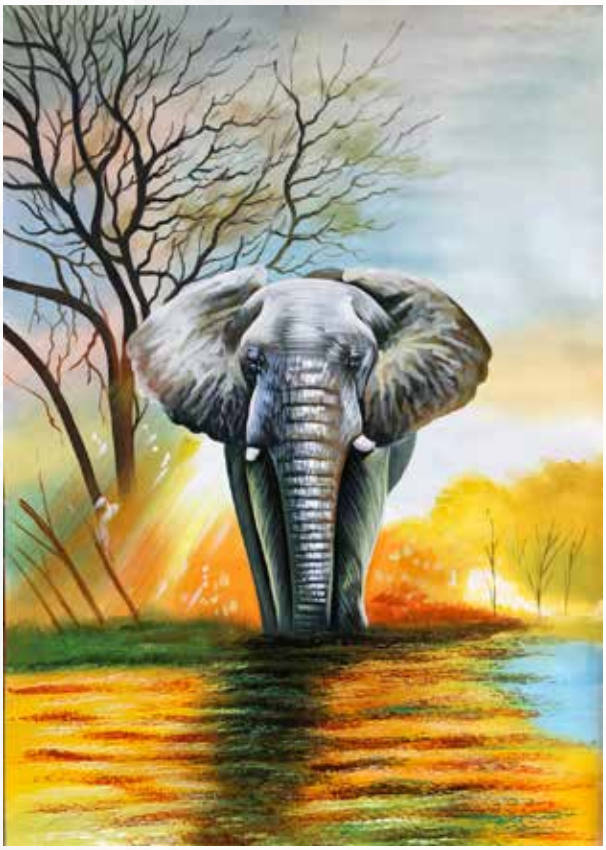

श्रीमती दीपिका चटर्जी
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

श्री चैतन्य महाप्रभु

चैतन्य महाप्रभु वैष्णव धर्म के प्रचारक और भक्तिकाल के महान संतो और प्रमुख कवियों में से एक है। इन्होनें वैष्णवों के गौडीय संप्रदाय की आधारशिला रखी।भजन गायकी की एक नयी शैली को जन्म दिया। राजनीतिक अस्थिरता के दिनों में हिंदु-मुस्लिम एकता की सद्भावना पर बल दिया,जात-पात की जंजीर को तोड़ने और सभी मानव जाति को एक सूत्र में पिरोनें के लिए चैतन्य महाप्रभु ने हरिनाम संकीर्तन आंदोलन की शुरुआत की।

भगवान श्रीकृष्ण का "प्रेमावतार" माने जाने वाले इस महान संत का जन्म बंगाल के नवद्वीप नामक स्थान में संवत 1407 में फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष की पूर्णिमा को होलिका दहन के दिन पंडित जगन्नाथ मिश्र और शची देवी के घर हुआ था।चैतन्य महाप्रभु के माता-पिता को पहले 8 कन्याएं हुई थी परंतु जन्म के साथ ही सभी की मृत्यु हो गई, इसके पश्चात् एक पुत्र की प्राप्ति हुई जिसका नाम विश्वरुप रखा। पुनः दस वर्ष पश्चात् एक पुत्र की प्राप्ति हुई जिसका नाम विश्वंभर रखा गया। नीम वृक्ष के नीचे जन्म होने के कारण सभी इन्हें 'निमाई' कहकर पुकारते थे तथा गौरवर्ण का होने के कारण लोग इन्हें 'गौरांग', 'गौर हरि', 'गौर सुंदर' आदि भी कहते थे। उनकी माँ के पिता पंडित नीलाम्बर चक्रवर्ती जो एक प्रसिद्ध ज्योतिषी थे, उन्होनें भविष्यवाणी की थी कि यह बालक भविष्य में एक महापुरुष और जीवनभर हरिनाम का प्रचार करेगा। उनकी भविष्यवाणी सच साबित हुई और शिशु विश्वंभर आगे चलकर चैतन्य महाप्रभु कहलाये। कहते हैं कि इस महान कृष्णभक्त का बचपन अनेक विलक्षणताओं से भरा था। जब वे 11 वर्ष के हुए तो पिता का स्वर्गवास हो गया और बड़े भाई विश्वरूप भी किशोरवय में संन्यासी बन गये। उसके बाद से निमाई ही माँ का एकमात्र सहारा रह गये। तीक्ष्ण बुद्धि के निमाई 15 वर्ष की किशोरवय में न्यायशास्त्र पर एक अपूर्व ग्रंथ लिखकर 'निमाई पंडित' के नाम

से विख्यात हो गये थे। 15-16 वर्ष की अवस्था में इनका विवाह लक्ष्मी देवी के साथ हुआ। सन् 1505 में सर्पदंश से पत्नी की मृत्यु हो गई। वंश चलाने की विवशता के कारण इनका दूसरा विवाह नवद्वीप के राजपंडित सनातन की पुत्री विष्णुप्रिया के साथ हुआ। कहा जाता है कि पिता के निधन के एक वर्ष बाद निमाई उनका श्राद्ध करने जब गया तीर्थ गये तो वहाँ उनकी भेंट ईश्वरपुरी नाम के एक वैष्णव संत से हुई जिन्होंने उन्हें कृष्णभक्ति का मंत्र दिया। उन्होंने निमाई से 'कृष्ण-कृष्ण' रटने को कहा। तभी से इनका सारा जीवन बदल गया और ये हर समय भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन रहने लगे। भगवान श्रीकृष्ण के प्रति इनकी अनन्य निष्ठा व विश्वास के कारण इनके असंख्य अनुयायी हो गए। सर्वप्रथम नित्यानंद प्रभु व अद्वैताचार्य महाराज इनके शिष्य बने। इन दोनों ने निमाई के भक्ति आंदोलन को तीव्र गति प्रदान की। निमाई ने अपने इन दोनों शिष्यों के सहयोग से ढोलक, मृदंग आदि वाद्य यंत्र बजाकर व उच्च स्वर में नाच-गाकर 'हरि नाम संकीर्तन' करना प्रारंभ किया।

हरे-कृष्ण, हरे-कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण, हरे-हरे। हरे-राम, हरे-राम, राम-राम, हरे-हरे॥

यह अठारह शब्दीय (32 अक्षरीय) कीर्तन महामंत्र निमाई की ही देन है। इसे 'तारकब्रह्ममहामंत्र' कहा गया व कलियुग में जीवात्माओं के उद्धार हेतु प्रचारित किया गया था। उन्होंने अपनी आयु के 24वें वर्ष में उसी श्री केशव भारती के मार्गदर्शन में कटोआ में सन्यास ग्रहण किया। चैतन्य ने अपने जीवन का शेष भाग प्रेम और भक्ति के प्रचार करने में लगाया। उनके पंथ का द्वार सभी के लिए खुला था। हिन्दू और मुसलमान सभी ने उनका शिष्यत्व ग्रहण किया। इनके अनुयायी चैतन्य को विष्णु का अवतार मानते हैं। अपने जीवन के अठारह वर्ष उन्होंने उड़ीसा में बिताये। छह वर्ष तक वे दक्षिण भारत, वृन्दावन आदि स्थानों में विचरण करते रहे। छः वर्ष मथुरा से जगन्नाथ तक के सुविस्तृत प्रदेश में अपने सिद्धांतों का प्रचार किया तथा कृष्ण की भक्ति की ओर लोगों को प्रवृत्त किया।

भगवान श्रीकृष्ण की द्वापरयुगीन विलुप्त लीलास्थली वृन्दावन को पुनः चैतन्य करने का श्रेय महाप्रभु जी को ही जाता है। अगर वे वृन्दावन नहीं जाते तो नि:संदेह कृष्ण की लीला भूमि केवल मिथक बन कर रह जाती। उन्होंने अपने छह प्रमुख अनुयायियों को वृंदावन भेजकर वहां सप्त देवालयों की आधारशिला रखवायी थी जो बाद में गौड़ीय संप्रदाय के षड्गोस्वामियों के नाम से विख्यात हुए। इन छह आध्यात्मिक विभूतियों- गोपाल भट्ट गोस्वामी, रघुनाथ भट्ट गोस्वामी, रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी, जीव गोस्वामी व रघुनाथ दास गोस्वामी ने वृंदावन में सात वैष्णव मंदिरों की स्थापना कर कृष्ण की क्रीड़ास्थली को पुनः जीवंत बनाने में उल्लेखनीय योगदान दिया था। गौड़ीय संप्रदाय के ये सात प्रमुख वैष्णव मंदिर हैं- गोविंददेव मंदिर, गोपीनाथ मंदिर, मदनमोहन मंदिर, राधा रमण मंदिर, राधा दामोदर मंदिर, राधा श्यामसुंदर मंदिर और गोकुलानंद मंदिर। चैतन्य की यात्राएं उन्हें पुरी ले आई जहाँ उनकी मुलाकात वासुदेव सार्वभौम से हुई, उन्होंने चैतन्य से कहा कि यदि वह एक संन्यासी के रूप में सफल होना चाहते हैं तो उन्हें वेदांत जानना चाहिए। इस यात्रा के दौरान राजा प्रतापरुद्र देव चैतन्य के शिष्य बन गए।उनकी अगली यात्रा दक्षिण की तीर्थयात्रा थी, जहां उन्होंने दक्षिण की अधिकांश भाषाएं सीखीं।दक्षिण की यात्रा के बाद चैतन्य महाराष्ट्र गए।चैतन्य अंततः 1516 में पुरी लौट आए और वहाँ 18 साल तक रहे, जहाँ उन्होंने अपना समय भगवान जगन्नाथ की पूजा में बिताया। वे जगन्नाथ की पूजा करते हुए आनंदित हो जाते थे। अंत में, उन्होंने पुरी में देह त्याग दिया, कहा जाता है कि वे समुद्र में प्रवेश कर गए और फिर कभी वापस नहीं लौटे।

हरि कीर्तन के साथ चैतन्य देव जी ने जन कल्याण के भी अनेकानेक कार्य किये थे। विशेषकर कुष्ठ रोगियों की सेवा और विधवाओं का उद्धार। उन्होंने बंगाल की विधवाओं को वृंदावन आकर प्रभु भक्ति के रास्ते पर आने को प्रेरित किया। वृन्दावनदास की "चैतन्य भागवत", कृष्णकृष्णदास की "चैतन्य चरितामृत", कवि कर्णपुर की "चैतन्य चंद्रोदय" तथा प्रभुदत्त ब्रह्मचारी द्वारा रचित "श्री श्री चैतन्य-चरितावली" आदि रचनाओं में चैतन्य महाप्रभु की महिमा गान के साथ के उनके लोकहित के कामों के बारे में भी अनेक महत्वपूर्ण जानकारियां मिलती हैं। श्री चैतन्य महाप्रभु के आगमन ने भक्ति आंदोलन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया, जिसमें सांप्रदायिक भक्ति, समावेशिता, विभिन्न भक्ति परंपराओं के विलय और भक्ति साहित्य के पोषण पर जोर दिया गया। उनकी शिक्षाएँ और अभ्यास आध्यात्मिक प्रेम और भक्ति की खोज में लाखों अनुयायियों को प्रभावित और एकजुट करना जारी रखते हैं। चैतन्य महाप्रभु भक्ति योग के ऐसे संत थे जिन्होंने भगवान कृष्ण की भक्ति में अपना सर्वस्व जीवन बिताया। उनका संपूर्ण जीवन ईश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति का एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

पी श्रीनिवास राव
पदनाम : सहायक पर्यवेक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

पाँचवाँ वेद

महाभारत को पाँचवाँ वेद भी कहा जाता है "भारत पंचमोंवेद"। यह उसकी महानता के कारण है। इसकी मुख्यकथा तो कौरव-पांडवों की है किंतु अनेक नैतिक कथाएँ इसमें गुत्थी हुई है। भीष्म की शिक्षा विदुर की नीति और भगवदगीता महाभारत के प्रमुख भाग है।

"यदिहास्ति तदन्यत्र
यननेहास्ति न तत कवचित"

जो इसमें है वही सर्वत्र पाया जाता है किंतु जो इसमें नहीं है वह कहीं नहीं है। यह उक्त महाभारत के लिए सटीक है। इसके पात्र मानव स्वभाव के विविध पक्षों को उजागर करते हैं। हठी-दुर्योधन, धूर्त (चुगलखोर) - शकुनि, बहुभोजी (पेटू)-बकासूर, पुत्रमोह-धृतराष्ट्र, उदारता-कर्ण, गुरुप्रेम-एकलव्य, धर्मज्ञ-युधिष्ठिर। ये सारे पात्रों में मानव-स्वभाव के सभी गुण परिलक्षित होते हैं।

विषय की गहनता और आकार की विशालता की दृष्टि से इस ग्रंथ का नाम 'महाभारत' सार्थक है। ("महत्तवात भारवत्तात च महाभारतमुच्यते"।) ग्रीक ग्रंथ इलियड और ओडिसी को एक साथ मिलाने पर भी 'महाभारत' ही विशाल है। विश्व की कोई भी साहित्यिक कृति इसके समतुल्य नहीं है।

व्यासजी द्वारा रचित महाभारत ग्रंथ के काल की परिस्थिति और आधुनिक भारत की परिस्थिति भिन्न दिखाई देती हैं। गृह कलह, परिवार कलह किस तरह देश का कलह बन जाता है यह तब भी था आज भी है और आगे भी रहेगा। धर्म-अधर्म का युद्ध अविराम है। अतः महाभारत की प्रासंगिकता का प्रश्न ही नहीं उठता। यह प्रत्येक युग, प्रत्येक काल, हर एक परिस्थिति में प्रासंगिक था, है और रहेगा।

वर्तमान में अन्य देशों के एवं भारत के दृष्टिकोण में जमीन आसमान का अंतर दिखाई देता है। जय ही परम लक्ष्य है यह भारत चित्र का दृष्टिकोण कभी नहीं है। किंतु विदेशों में शक्तिशाली राष्ट्रों की महत्वाकांक्षा में न्याय-अन्याय का विवेचन किए बिना साम, दाम, दंड, भेद की नीतियां अपनाते हुए जय प्राप्त करना है। कौरव-पांडव की नीतियां कुछ ऐसी ही परिलक्षित होती हैं।

भारत पथ (अंग्रेजी पुस्तक द इंडिया वे) में एस. जयशंकर महोदय द्वारा लिखी पुस्तक एक प्रेरणादायक पुस्तक है। महाभारत में प्रतिपादित नीतियां आधुनिक काल में भी प्रासंगिक हैं।

पांडवों द्वारा सर्वदा आत्मसंयम की नीति अपनाई गई, शक्तिशाली होते हुए भी। श्रीकृष्ण ने भी शांति प्रस्ताव अनेक बार कौरवों के समक्ष रखा युद्ध को अंतिम विकल्प बताया। अर्जुन

जब युद्धक्षेत्र में धर्म संशय में थे और कर्तव्य से विमुख हो गए तब कर्मयोग की शिक्षा दी। यदि कुछ देश परिणाम की चिंता किए बिना दृढ़ संकल्प शक्ति से पहल करते हैं तो भारत का लक्ष्य भी वही होना चाहिए। विषम परिस्थितियों में प्रबल इच्छा शक्ति का सहारा लेना चाहिए। अपने कर्तव्य पर अडिग रहना चाहिए। दीनता और पलायन को स्थान ही नहीं देना चाहिए।

अति शक्तिशाली देश मिलकर यह निर्णय लेते हैं कि भारत जैसा देश अणु-परमाणु जैसे अस्त्रों का निर्माण न करें। करने पर धमकाया भी जाता है किंतु भारत ने स्वहित देश की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अणु-परमाणु जैसे अस्त्रों का निर्माण किया कईयों को नाराज भी किया किंतु विषम परिस्थितियों को रोका।

शक्ति प्राप्त है अतः इसका प्रदर्शन प्रयोग रूप में करना अधर्म है। चीफ ऑफ डिफेन्स स्टॉफ विपिन रावत जी के अनुसार "पहली गोली हमारी नहीं होगी लेकिन इसके बाद हम गोलियों की गिनती भी नहीं करेंगे"। भारत की यही नीति रही है। अमेरिका जैसे देश हमेशा आत्मसंयम खो बैठते हैं और उसका दुष्परिणाम भी भुगतते हैं। श्रीकृष्णजी ने शिशुपाल के 100 अपराधों को क्षमा करते हुए अपना शस्त्र सुदर्शन चक्र चलाया था। अर्जुन ने कई लोकों से शस्त्र प्राप्त किए परन्तु युद्ध की पहल नहीं की।

शक्तिसंपादन के विषय में विवेचन-सामर्थ्य का अतिमहत्त्व है। चुनाव में राज्यों का संग्रह, युद्ध में सैन्य बल का संग्रह प्रमुख हैं। अर्जुन ने श्रीकृष्ण को चुना तो दुर्योधन ने नारायणी सेना को। श्रीकृष्ण ने कहा कि वे युद्ध में हथियार नहीं उठाएंगे फिर भी अर्जुन ने विवेक से काम लिया। दुर्योधन युद्धक्षेत्र में पहुँचकर सैन्य आंकलन कर आत्मविश्वास बटोरने में लगे थे। वर्तमान में न केवल मानवीय बल वरन कृत्रिममेधा (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस), मानवयंत्र (रोबॉटिक्स) सर्वोलंस (निरीक्षण यंत्र) आदि क्षेत्रों का प्रयोग अपेक्षणीय है।

राष्ट्र के कुछ नियम होते हैं। उनका पालन अनिवार्य है। वरना गृहयुद्ध की स्थिति पैदा होती है। अंतर्राष्ट्रीय नियमों का पालन भी अनिवार्य होता है। जब तीव्र संघर्ष का समय आता है तब नियम, नीति सिद्धांत तो दूर-दूर तक नजर ही नहीं आते राज्य और देशलोलुपता ही उभर कर आते हैं। अभिमन्युवध में ऐसा ही नियमोल्लंघन सात महारथियों द्वारा किया गया था। वर्तमान में धर्म के नाम पर देश विस्तार लोभ में यह नियमोल्लंघन सर्वत्र दिखाई देता है। ये संयुक्त राष्ट्र संघ नियमों का भी पालन नहीं करते खुद को सार्वभौम समझते हैं। उत्तरकोरिया, पाकिस्तान जैसे देश विवेकहीनता का कार्य करते हैं। यूक्रेन-रूस युद्ध में भी यही नियमोल्लंघन दिखाई देता वो जो अश्वत्थामा के विषय में था और अश्वत्थामा को इसका दंड मिला था। वह मानसिक संतुलन खो बैठा था।

संघर्षकाल में व्यूहात्मक छल-कपट का भी सहारा लिया जाता है। आंग्ल शासनकाल में प्लासी युद्ध इसका दृष्टान्त हैं। ब्रिटिश सरकार ने धन से मीर जाफर को खरीदकर बंगप्रदेश को अपने वश में कर लिया था। अंग्रेजों ने कहा था कि वे भारत देश के हित में कर रहे हैं। दुर्योधन ने बाल्यकाल में भीम को जल में डुबाना, बाद में लाक्षागृह, द्यूतकीड़ा जैसे व्यूहरचना शुरू की थी।

भारत सदा शांति एवं अहिंसा की नीति अपनाता चला आ रहा है। एकता, समन्वय, संगठन आदि शांति की कुंजी है। आज जब वास्तविक मैत्री विलुप्तप्राय है आपसी संदेह बढ़ते जा रहे हैं भारत को जागरूक कदम उठाने और बढ़ाने है ऐसे समय में विदेशमंत्री एस. जयशंकर महोदय द्वारा महाभारत ग्रंथ प्रेरित भारतपथ (द इंडिया वे) एक विश्व गुरु साबित होता है।

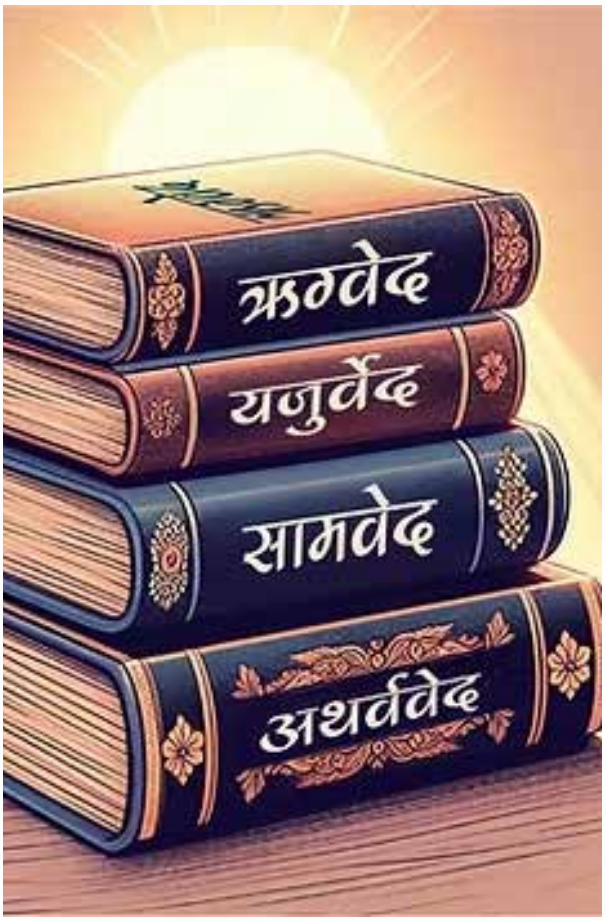

श्री सत्यनारायण महान्ती

लेखापरीक्षक /कल्याण अनुभाग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

ॐ (ओ३म्) की ध्वनि एवं ध्यान: आलौकिक आनंद का पथ

मनुष्य का मन एक ऐसा पर्दा है, जो हमें हमारी वास्तविक सत्ता व अमर आत्मा के दिव्य दर्शन से वंचित रखता है। वास्तव में हम सत्य के एक प्रतिनिधि हैं। हमे निरंतर ॐ (ओ३म्) की ध्वनि एवं ध्यान के द्वारा अपने तुच्छ अहं को विश्व चेतना में घोल ने की जरुरत है।

ॐ (ओ३म्) ध्वनि

योगाभ्यास में ओ३म् के उचारण के अद्भुत प्रभाव अनुभव होते हैं। इसमें ॐ का उचारण करना व सुनना दोनों ही शामिल हैं।

विधि :

आसन बिछाकर पदामासान/सुखासन में बैठे। रीढ़ सीधी, हाथ ज्ञानमुद्रा में घुटने पर, नेत्र कोमलता से बंद करें। दो- तीन गहरी लंबे श्वास लें। श्वास गहरा भरें, मुख खोलकर व गोलकर ओ(अ+उ) का उचारण करें। कंठ से स्पंदन हो, फिर होंठ बंद करते हुए 'म्' का गुंजार करें। धीरे धीरे लंबा गुजन करें। जब तक आनंद मिले तब तक करें।

लाभ :

ओंकार ध्वनि से शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक लाभ होता है ,यथा-

. मन कि शक्ति बढ़ती है, मन हल्का, प्रसन्न व पवित्र होता है।

. हर प्रकार की तनाव दूर होता है, दमा(Asthma), रक्तचाप(Blood Pressure) आदि ठीक होते हैं।

. शरीर की कोशिकाओं का नव निर्माण होता है।

. शरीर स्वस्थ, सुन्दर तथा पवित्र बनता है।

. कंठनली में स्वरातान्तु की ट्यूनिंग होती है।

. फेफड़ों की कार्य क्षमता बढ़ती है, श्वसन विकार दूर होता है।

. रक्त शुद्धि होती है, ह्रदय को कम काम करना पड़ती है।

. पाचन क्रिया सुधरती है तथा निष्कासन प्रणाली सुचारू रूप से कार्य करती है।

ध्यान

ध्यान ओर कुछ नहीं ,बल्कि आत्म सूचना का एक तरीका है, अपने दिव्य प्रकृति अर्थात दिव्यात्मा द्वारा लगातार मन पर आक्रमण करने से अज्ञान का पर्दा हटाया जाना ध्यान है। मन को अपने मूल स्वाभाव में ठहराने की आदत डालना ध्यान है।

विधि :

आसन बिछाकर अपनी सुविधा के अनुसार सुखपूर्वक किसी भी आसन पर बैठें, जिससे गर्दन एवम् कमर सीधी रहे। दोनों हाथों को घुटने पर ज्ञान मुद्रा में रखे। नेत्र कोमलता से बंद करें,परन्तु अन्दर से भूमध्य (दोनों भ्रूलता के ऊपर जहाँ तिलक या विंदी लगाते हें) में दृष्टि को ले जाकर ,फिर धीरे धीरे सहस्त्रार(सर के ऊपर) चक्र पर स्थित कर लें। अब ओ३म् मंत्र का मानसिक जप कुछ देर तक करें जिससे चंचल मन को शांत करने में सहायता मिले। जैसे ही मन शांत होने लगे, तब मानसिक रूप में श्रद्धा पूर्वक परमात्मा के प्रति समर्पित हो जाएं। अपनी आत्मा की अनंत शान्ति की गहराई में उतरते जाईए। अपने शारीरिक चेतना से ऊपर जाईए। इस स्थिति में कुछ देर बैठे। अंत में धीरे धीरे दोनों हाथेली को सहलाते निकली ऊर्जा को आँखों पर सहलाएँ, कोमलता से आँखें खोलें।

लाभ :

जब इस अवस्था में डूब कर बाहर आयेंगे, तो सारी दुनियाँ बदली हुई होगी। शरीर के अन्दर एक सजागता और शान्ति का निवास अनुभव होने लगेगा। एक आलौकिक आनंद भीतर छा जायेगा। यह अनुभव होगा कि जीवन सभी द्वन्दात्मकता से स्वतंत्र हो गया है। ध्यान से पवित्रता, शान्ति, भक्ति, श्रद्धा, तृप्ति, दिव्यता, कर्तव्यबोध, आत्मबोध, विवेकशक्ति, बुद्धिमता आदि का विकास होता है।

श्री राजेश झा

वरि. लेखापरीक्षक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

स्वस्थ जीवनशैली

पुनर्वित्तं पुनर्मित्रं पुनर्भार्या पुनर्मही । एतत्सर्वं पुनर्लभ्यं न शरीरं पुनः पुनः ॥

भावार्थ :

जीवन में सब कुछ वापस पाया जा सकता है- पत्नी, राज्य, मित्र और धन । केवल एक चीज जिसे आप कभी वापस नहीं पा सकते हैं वह है आपका शरीर । एक बार आपका शरीर/स्वास्थ्य खो जाने के बाद, यह फिर से अपनी पूर्णता तक नहीं पहुंच सकता है । इसलिए जरूरी है कि आप रोजाना अपने शरीर की देखभाल करें ।

संपूर्ण और संतुलित जीवन जीने के लिए स्वस्थ जीवनशैली अपनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है । स्वस्थ जीवनशैली का मतलब है ऐसा जीवन जीना जिसमें शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य का संतुलन बना रहे । स्वस्थ जीवनशैली न केवल बीमारियों से बचाती है, बल्कि मानसिक शांति और सुख का भी आधार है ।

स्वस्थ जीवनशैली हमारे जीवन को लंबा और खुशहाल बनाती है । इसलिए स्वस्थ जीवनशैली को अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए और इसके सभी पहलुओं को सही तरीके से अपनाना चाहिए । इसलिए हमें स्वस्थ जीवनशैली को अपने दैनिक जीवन में शामिल करने का प्रयास करना चाहिए ।

स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के कुछ प्रमुख उपाय-

संतुलित आहार :

संतुलित आहार का मतलब है विभिन्न प्रकार के पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों का सेवन । इसमें फल, सब्जियाँ, अनाज, दालें, दूध और दुग्ध उत्पाद शामिल हैं । इसके साथ ही, तेल, नमक और चीनी का सीमित सेवन करना चाहिए । जंक फूड, तली-भुनी चीजें और मिठाइयों से बचना चाहिए क्योंकि ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकते हैं ।

नियमित व्यायाम :

नियमित व्यायाम स्वस्थ जीवनशैली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। रोजाना कम से कम 30 मिनट का व्यायाम शरीर को तंदरुस्त और सक्रिय बनाता है। यह वजन को नियंत्रित करने, हृदय को स्वस्थ रखने और मानसिक तनाव को कम करने में मदद करता है। योग, दौड़ना, तैराकी और साइक्लिंग कुछ अच्छे व्यायाम के उदाहरण हैं।

पर्याप्त नींद :

नींद का भी हमारे स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। पर्याप्त नींद शरीर को आराम और पुनर्जीवन देती है। प्रतिदिन 7-8 घंटे की नींद आवश्यक है। नींद की कमी से तनाव, चिड़चिड़ापन और अन्य मानसिक समस्याएँ हो सकती हैं।

तनाव प्रबंधन :

तनाव हमारे जीवन का हिस्सा है लेकिन इसे सही तरीके से प्रबंधित करना महत्वपूर्ण है। योग, ध्यान और ध्यान तकनीकें तनाव को कम करने में सहायक होती हैं। इसके अलावा सकारात्मक सोच और सही दृष्टिकोण भी तनाव को कम करने में मदद करता है।

हाइड्रेशन :

पर्याप्त मात्रा में पानी पीना भी स्वस्थ जीवनशैली का हिस्सा है। पानी शरीर के विभिन्न कार्यों को सुचारू रूप से चलाने में मदद करता है। प्रतिदिन कम से कम 8-10 गिलास पानी पीना चाहिए।

नियमित स्वास्थ्य जांच :

स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए नियमित स्वास्थ्य जांच आवश्यक है। इससे किसी भी बीमारी का प्रारंभिक अवस्था में पता चल सकता है और समय पर उपचार किया जा सकता है।

स्वस्थ आदतें :

धूम्रपान, शराब और अन्य नशीले पदार्थों से दूर रहना चाहिए। ये स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं और कई गंभीर बीमारियों का कारण बन सकते हैं।

सामाजिक जीवन :

सामाजिक जीवन का हमारे मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताना, सामाजिक गतिविधियों में भाग लेना और समुदाय में योगदान देना जीवन को समृद्ध और संतुलित बनाता है। सामाजिक नेटवर्क तनाव को कम करने और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

स्वच्छता :

व्यक्तिगत स्वच्छता का पालन करना भी स्वस्थ जीवनशैली का हिस्सा है। नियमित स्नान, दांतों की सफाई, हाथ धोना और साफ कपड़े पहनना स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक हैं। स्वच्छता न केवल बीमारियों से बचाती है, बल्कि आत्म-सम्मान को भी बढ़ाती है।

स्वस्थ कार्यस्थल :

कार्यस्थल पर स्वस्थ वातावरण बनाए रखना भी आवश्यक है। कार्यस्थल पर आरामदायक और सुरक्षित वातावरण होना चाहिए। नियमित ब्रेक लेना, सही पॉस्चर में बैठना और कार्यस्थल पर तनाव को प्रबंधित करना आवश्यक है। इसके अलावा, सहकर्मियों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना और टीमवर्क को बढ़ावा देना भी महत्वपूर्ण है।

डिजिटल डिटॉक्स :

डिजिटल उपकरणों और सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग मानसिक तनाव और शारीरिक समस्याओं का कारण बन सकता है। डिजिटल डिटॉक्स का मतलब है समय-समय पर डिजिटल उपकरणों से दूर रहना और वास्तविक जीवन में संलग्न होना। यह मानसिक शांति और ध्यान केंद्रित करने में मदद करता है।

सुरक्षा उपाय :

सुरक्षा उपाय अपनाना भी स्वस्थ जीवनशैली का हिस्सा है। सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करना, हेलमेट और सीटबेल्ट का उपयोग करना और घर और कार्यस्थल पर सुरक्षा उपायों का पालन करना जीवन को सुरक्षित बनाता है। इसके अलावा, आपातकालीन स्थिति में सही तरीके से प्रतिक्रिया देने की जानकारी होना भी आवश्यक है।

आत्म-सम्मान और आत्म-स्वीकृति :

स्वस्थ जीवनशैली के लिए आत्म-सम्मान और आत्म-स्वीकृति महत्वपूर्ण हैं। अपने आप को स्वीकार करना, अपनी क्षमताओं को पहचानना और अपने आप से प्यार करना जीवन को संतुलित और सुखी बनाता है। आत्म-सम्मान बढ़ाने के लिए सकारात्मक आत्म-संवाद और आत्म-सुधार महत्वपूर्ण हैं।

ध्यान :

ध्यान मानसिक शांति और संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं। नियमित ध्यान से तनाव कम होता है, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ती है और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार होता है। इसके अलावा, यह शारीरिक स्वास्थ्य को भी लाभ पहुंचाता है।

आत्म-संयम और अनुशासन :

स्वस्थ जीवनशैली के लिए आत्म-संयम और अनुशासन महत्वपूर्ण हैं। अपने कार्यों और आदतों में संतुलन बनाए रखना, समय पर सोना-जागना और नियमित व्यायाम करना अनुशासन का हिस्सा है। आत्म-संयम के माध्यम से हम अपने स्वास्थ्य और जीवन को बेहतर बना सकते हैं।

स्वस्थ जीवनशैली अपनाना एक निरंतर प्रक्रिया है जो जीवन के हर पहलू को प्रभावित करती है। यह न केवल बीमारियों से बचाव करती है बल्कि जीवन को अधिक संतुलित, सुखी और संतोषजनक बनाती है। इसलिए हमें स्वस्थ जीवनशैली के सभी पहलुओं को अपने जीवन में शामिल करने का प्रयास करना चाहिए और नियमित रूप से इन्हें अपनाने की दिशा में कार्य करना चाहिए।

श्री अमित कुमार प्रधान
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

स्वास्थ्य के क्षेत्र में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता): संभावनाएं, चुनौतियां और समाधान

वैश्विक चलन के मुताबिक़भारत में भी स्वास्थ्य सेवाओं में AI के इस्तेमाल का बाज़ार तेज़ी से बढ़ रहा है। लेकिन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से सेहत में बेहतरी आएउससे पहले बहुत सी चुनौतियों से निपटने के साथ साथ सामने खड़े अवसरों का फ़ायदा उठाने की मेहनत करनी होगी।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिमबुद्धिमत्ता)(AI) का इस्तेमाल बड़ी तेज़ी से बढ़ता जा रहा है और अगले एक दशक के दौरान ये स्वास्थ्य के मामले में पूरी दुनिया में बड़ी क्रांति ला सकता है। जैसा कि आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (OECD) ने कहा है किAI से स्वास्थ्य की कुछ मुख्य चुनौतियों से निपटा जा सकता है। इनमें कामगारों की घटती तादादउम्रदराज़ लोगों की बढ़ती संख्याभयंकर बीमारियों के बढ़ते बोझ की वजह से पेचीदगियों में इज़ाफ़े और दुनिया में आम लोगों की सेहत के लिए उभरते नए नए ख़तरों जैसी समस्याएं शामिल हैं। दुनिया भर का स्वास्थ्य उद्योग लगभग 9 ट्रिलियन डॉलर या फिर दुनिया की GDP के 11 प्रतिशत के बराबर है। ऐसे में आने वाले समय में होने वाले इन परिवर्तनों का एक बड़ा आर्थिक प्रभाव भी देखने को मिलेगा।

पूरी दुनिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिमबुद्धिमत्ता) और मशीन लर्निंग (ML) बीमारियों की जांचऔर इलाज में तरह तरह से मदद करना शुरू कर चुके हैं। कई मामलों में तोसेहत से जुड़े आंकड़ों का एल्गोरिद्म के आधार पर विश्लेषण होने से अधिक सटीक जांच और फिर ज़्यादा केंद्रीकृत इलाज करने में मदद मिली है। सेहत का पूर्वानुमान लगाने वाले मॉडल भी इस्तेमाल किए जा रहे हैं। हालांकि बीमारियों का पैटर्न पता करने में इनका उपयोग अभी बहुत सावधानी के साथ किया जा रहा हैताकि बीमारी होने से पहले ही उसे रोकने के उपाय और हर व्यक्ति की ख़ास ज़रूरत के मुताबिक़ इलाज की योजना विकसित की जा सके। मिसाल के तौर पर अमेरिकन नेशनल सेंटर फॉर बायोटेक्नोलॉजी इंफॉर्मेशन द्वारा किए गए एक अध्ययन के मुताबिक़ AI(कृत्रिमबुद्धिमत्ता) ने 25 मरीजों की सेहत से जुड़े आंकड़ों में से कोविड19 के 68 प्रतिशत पॉज़िटिव मामलों का पता लगायाथा। जबकि पेशेवर स्वास्थ्य कर्मचारी उन्हें पहले ही कोविड-19 से नेगेटिव की रिपोर्ट दे चुके थे।

भारत की स्थिति क्या है?

वैश्विक चलन के मुताबिक़ स्वास्थ्य के क्षेत्र में AI (कृत्रिमबुद्धिमत्ता) का भारतीय बाज़ार भी बड़ी तेज़ी से बढ़ रहा है और 2025 तक इसके 1.6 अरब डॉलर पहुंचने का अनुमान है। जबकि 2020 से 2025 के बीच इसकी वार्षिक चक्रवृद्धि विकास दर (CAGR) 40.5 फ़ीसद रहने का अनुमान है। इस क्षेत्र में लाखों नए रोज़गार पैदा होने की भी उम्मीद है। ख़बरें इशारा करती हैं कि 2028 तक भारत के हेल्थकेयर सेक्टर में 23 प्रतिशत नौकरियों की जगह AI ले लेगा। हालांकि इस क्षेत्र में कुल भर्ती में 25 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी होने की संभावना है जिसमें से ज़्यादातर नौकरियां AI के समाधान विकसित करने वालों डेटा वैज्ञानिकों और दूसरे तकनीकी पेशेवरों की होंगी।

कई मामलों में भारत की नेशनल स्ट्रेटेजी फॉर AI(2018) ने मौजूदा बदलावों की भूमिका तैयार कर दी थी। इसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आधारित समाधानों के इस्तेमाल के मामले में देश के स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र को 'संभवत: सबसे स्वाभाविक और स्पष्ट इस्तेमाल करने वाला' माना गया था। इस रणनीति में AI लागू करने के विशेष क्षेत्रों को रेखांकित किया गया था। जैसे कि बीमारी का जल्दीपता लगानाजांचनिर्णय लेना

और इलाजमेडिकल रिसर्च और ट्रेनिंग और पूरे भारत में लैब और कर्मचारियों की सुविधा में इज़ाफ़ा करना। इसमें से ज़्यादातर बातों को हक़ीक़त में तब्दील करने के प्रयास किए जा रहे हैं। उदाहरण के तौर परआयुष्मान भारत डिजिटल मिशन को ही लीजिए। इसका मक़सद नागरिकों की सेहत के आंकड़ों को देश के हेल्थ इकोसिस्टम के सभी अंगों के बीच उपयोग करना और हर नागरिक की सेहत के क्षैतिज रिकॉर्ड विकसित करना है। अब आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन के तहत डेटा की कई रजिस्ट्री विकसित की जा रही हैताकि अलग अलग जगहों पर जमा किए जा रहे डेटा को एक दूसरे से जोड़ा जा सके। इससे AI और मशीन लर्निंग के समाधान विकसित करके स्वास्थ्य व्यवस्था से जोड़ना आसान हो सकेगा। आज डेटा जमा करने की प्रक्रिया मज़बूत बनानेदेखरेख की गुणवत्ता सुधारने और ईसंजीवनी (ये भारत का राष्ट्रीय टेलीमेडिसिन प्लेटफॉर्म है) पर डॉक्टर और मरीज़ के बीच बातचीत में सुधार लाने के लिए AI (कृत्रिमबुद्धिमत्ता)और ML के मॉडलों का इस्तेमाल किया जा रहा है। इसके साथ साथ दो राष्ट्रीय सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को भी ख़ास तौर से इसीलिए स्थापित किया गया है ताकि स्वास्थ्य समस्याओं के AI पर आधारित समाधानों का विकास करके उनका उपयोग करने को बढ़ावा दिया जा सके।

AI(कृत्रिमबुद्धिमत्ता) के एप्लिकेशन लागू करने को मुख्यधारा में लाने और इस प्रक्रिया को तेज़ करने के लिए निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की भागीदारी की संभावनाएं भी सक्रियता से तलाशी जा रही हैं। नीति आयोग 2018से ही माइक्रोसॉफ्ट और फोरस हेल्थ के साथ मिलकर काम कर रहा हैताकि डायबेटिक रेटिनोपैथी का शुरुआतमें ही पता लगाया जा सके। इसके लिए AI का जो एल्गोरिदम विकसित किया जा रहा हैउसे बाद में प्राथमिक उपचार की ज़रूरत का पता लगाने के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकेगा। इसी तरहटाटा मेडिकल सेंटर और IIT खड़गपुर द्वारा भारत का बिना पहचान वाला कैंसर की इमेज का बैंक यानी कॉम्प्रिहेंसिव आर्काइव ऑफ इमेजिंग (CHAVI) विकसित किया गया है। ये AI के औज़ारों को कैंसर की तस्वीरों का इस्तेमाल करने की सुविधा मुहैया कराता है और इस तरह के मशीन लर्निंग के मॉडलों को जैविक संकेत की पहचान करने और कैंसर के रिसर्च में सुधार लाने के मामले में सशक्त बनाता है।

समस्याएं और उनका समाधान

आज भारत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आधारित स्वास्थ्य सेवा के मामले में काफ़ी सराहनीय उपलब्धियां हासिल कर रहा है। लेकिनडेटा तक पहुंचडेटा की निजता और दुरुपयोग और विनियमन को लेकर अनिश्चितताएं AI के व्यापक उपयोग की राह में बाधाएं खड़ी कर रही हैं।

कुल मिलाकरटुकड़ों में बंटे और अधूरे आंकड़ेभारत में स्वास्थ्य पर केंद्रित AI की राह में रुकावट बन रहे हैं और इससे ग़लत और ठोस प्रतिनिधित्व के अभाव वाले समाधान की दिशा में भटकने की आशंकाएं हैं। सेहत के बिना पहचान वाले आंकड़ों के भंडारण और साझा करने के संस्थागत संगठन की एक मज़बूत संस्कृति को बढ़ावा देना होगाताकि AI के रिसर्च और विकास में सहयोग को बढ़ावा दिया जा सके। मिसाल के तौर पर इंडिया डेटासेट प्रोग्रामदि नेशनल डेटा ऐंड एनालिटिक्स प्लेटफार्म और ओपेन गवर्नमेंट डेटा प्लेटफॉर्म जैसे मंचों के ज़रिए डेटा के समूहों को बड़ी तादाद में देश के रिसर्च और आविष्कार के इकोसिस्टम से साझा किया जा सकता है। इसके साथ साथ एक तय मानक में डेटा जुटाने का ढांचा और डेटा की सफ़ाई करने के मज़बूत औज़ार न होने से अक्सर आंकड़ों का अलग अलग संगठनों द्वारा इस्तेमाल कर पाने की राह में बाधाएं खड़ी होती हैं। इसके अलावा कई बार सेहत के बेहद बुनियादी ढांचे के बेहद पुराना होने की वजह से डेटा की सुरक्षा और उन्हें बड़ा स्वरूप देना मुश्किल हो जाता है।

भारत के स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के लिए डिजिटल पर्सनल डेटा प्रोटेक्शन (DPDP) एक्ट 2023 काफ़ी उम्मीदें जगाने वाला है। इस क़ानून के तहत निजी डेटा का प्रबंधन नैतिक रूप से करने और डेटा संरक्षण एवं निजता के सख़्त नियमों का पालन करना सर्वोच्च प्राथमिकता है। जैसे जैसे इस क़ानून को लागू किया जा रहा हैतो इससे स्वास्थ्य से जुड़े आंकड़ों को जमा करनेउन्हें एन्क्रिप्ट करनेभंडारण और प्रोसेसिंग की एक मज़बूत व्यवस्था निर्मित की जा सकती है। इन मानकों का पालन करने की ज़रूरत की वजह से साइबर सुरक्षा के मूलभूत ढांचे में निवेश बढ़ने की संभावना हैजिसमें भागीदारों के लिए ऐसी क्षमता का निर्माण भी शामिल होगाजिससे स्वास्थ्य व्यवस्थाओं को साइबर हमलों से बचाया जा सकेगा। डेटा जमा करने और इस्तेमाल करने के लिए मरीजों से साफ़ तौर पर सहमति लेना और उनको इस बात की अधिक जानकारी होना कि उनकी सेहत के आंकड़ों का वास्तव में किस मक़सद से इस्तेमाल हो रहा हैइससे सेहत के पूरे इकोसिस्टम में भरोसे को बढ़ावा दिया जा सकता है। कुल मिलाकर इन सभी तत्वों से AI के आविष्कार को प्रेरित किया जा सकेगा। लेकिन डेटा को आविष्कार के लिए उपयोग करने और मरीज़ की निजता को बनाए रखने के बीच एक बारीक संतुलन बनाने की आवश्यकता होगी।

सितंबर 2023 में G20 के नेताओं की नई दिल्ली घोषणा जारी हुई थी। इसमें राष्ट्राध्यक्षों ने 'AI के इस्तेमाल के लिए आविष्कार को बढ़ावा देने वाली प्रशासनिक व्यवस्था लागू करने की अपील की गई थीजो AI का अधिकतम लाभ उठाने के साथ साथ इससे जुड़े जोखिमों का भी ख़याल रखे।' स्वास्थ्यके क्षेत्र में AI के प्रशासन से जुड़ा एक अहम मसला ये है कि अगर स्वास्थ्य से जुड़ा कोई समाधान अगर बुरे नतीजे देता हैतो इसके लिए कौन जवाब देह और क़ानूनी तौर पर उत्तरदायी होगा। AI का विकास बार बार डेटा के प्रसंस्करण और विश्लेषण के ज़रिए किया जाता हैजिसमें बार बार गलतियों से सीख ली जाती है। मगर स्वास्थ्य सेवाओं के मामले में कोई मामूली सी गलती भी जानलेवा साबित हो सकती है। मिसाल के तौर पर जब ये पता चला कि IBM के वाटसन हेल्थ का कैंसर का पता लगाने वाले औज़ार को मरीजों के वास्तविक आंकड़ों के ज़रिए प्रशिक्षित नहीं किया गया थातो एक तूफान उठ खड़ा हुआ था। इस औज़ार को मरीजों की काल्पनिक केस स्टडी के ज़रिए तैयार किया गया था और ये केस स्टडी भी एक ही अस्पताल के कुछ डॉक्टरों के गिरोह ने मुहैया कराई थी इसके सुझावों को गलत और असुरक्षित पाया गया था।

आख़िर मेंभारत में आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस के क्षेत्र में कौशल के अभाव की कमी को दूर करना होगा। अनुमान है कि इस समय भारत के AI और डेटा साइंस के सेक्टर में लगभग चार लाख 16 हजार लोग काम कर रहे है लेकिनकम से कम दो लाख तेरह हजार और लोगों की सख्त आवश्यकता है। भारत में स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में तो विशेष रूप से AI और तकनीकी पेशेवरों की मांग बढ़ती हुई देखी जा रही है। आज जब सरकारतकनीकी कंपनियां और अकादमिक क्षेत्र आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के कौशल विकास के कार्यक्रम लागू कर रहे हैं। तोइन्हें सीखने वालों को उन अवसरों की जानकारी भी दी जानी चाहिए जिनका वो लाभ उठा सकते हैं। अब समय आ गया है कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में AI को लागू करने की दिलचस्पी को बढ़ावा देने का मज़बूत आधार तैयार किया जाए।

सुश्री आँखि सरकार
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

नव भारत के निर्माण में महिलाओं की भूमिका

भारत वर्ष एक सम्पन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है जहाँ महिलाओं का समाज में प्रमुख स्थान रहा है। ग्रामीण परिदृश्य में महिलाओं की बड़ी आबादी है। दुर्भाग्यवश विदेशी शासनकाल में समाज में अनेक कुरीतियां व विकृतियां पैदा हुई जिससे महिलाओं को उत्पीड़न हुआ।

आजादी के बाद महिलाओं का समाज में सम्मान बढ़ा लेकिन उनके सशक्तिकरण की गति दशकों तक धीमी रही। गरीबी व निरक्षरता महिलाओं की प्रगति में गंभीर बाधा रही हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल के माध्यम से महिलाओं को व्यवसाय की ओर प्रोत्साहित कर इन्हें आर्थिक रूप से सुदृढ़ किया जा सकता है। विशेषकर कृषि प्रसंस्करण उद्योगों, बैंकिंग सेवाओं और डिजिटलीकरण की सहायता से महिलाओं के सामाजिक और वित्तीय सशक्तिकरण की शुरुआत की जा सकती है।

भारतीय महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवन्त उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है। भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर के शब्दों में हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी हैं बल्कि इस रौशनी की लौ भी हैं। अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा का स्रोत रही हैं। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई से लेकर भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले तक, महिलाओं ने बड़े पैमाने पर समाज में बदलाव के बड़े उदाहरण स्थापित किए हैं।

2030 तक पृथ्वी को मानवता के लिए स्वर्ग समान जगह बनाने के लिए भारत सतत विकास लक्ष्यों की ओर तेजी से बढ़ चला है। लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण करना सतत विकास लक्ष्यों में एक प्रमुखता है। वर्तमान में प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, समावेशी आर्थिक और सामाजिक विकास जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए विशेष ध्यान दिया गया है।

महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति हैं। प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने ठीक ही कहा है कि जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं। जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं। इसलिए यह इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की थीम "एक स्थायी कल के लिए आज लैंगिक समानता" है।

भारतीय इतिहास महिलाओं की उपलब्धि से भरा पड़ा है। कादम्बिनी बोस गांगुली (18 जुलाई 1861-3 अक्टूबर 1923) पहली भारतीय महिला चिकित्सक थीं और उनको भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में सबसे पहले भाषण देने वाली महिला का

गौरव भी प्राप्त है। आनंदीबाई गोपालराव जोशी (1865 - 1887) संयुक्त राज्य अमेरिका में पश्चिमी चिकित्सा में दो वर्षीय डिग्री प्राप्त करने वाली पहली भारतीय महिला थीं।

सरोजिनी नायडू ने साहित्य जगत में और राजनीति में अपनी छाप छोड़ी। हरियाणा की संतोष यादव ने दो बार माउंट एवरेस्ट फतेह किया। बॉक्सर एमसी मैरी कॉम एक जाना-पहचाना नाम है। हाल के वर्षों में, हमने कई महिलाओं को भारत में शीर्ष पदों पर और बड़े संस्थानों का प्रबंधन करते हुए भी देखा है - अरुंधति भट्टाचार्य, एसबीआई की पहली महिला अध्यक्ष, अलका मित्तल, ओएनजीसी की पहली महिला सीएमडी, सोमा मंडल, सेल अध्यक्ष, कुछ ओर नामचीन महिलाएं हैं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। हाल ही में मनु भाकर पेरिस 2024 में आयोजित एक ही ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनीं।

कोविड-19 के दौरान कोरोना योद्धाओं के रूप में महिलाओं डाक्टरों, नर्सो, आशा वर्करों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं व समाजिक कार्यकर्ताओं ने अपनी जान की परवाह न करते हुए मरीजों को सेवाएं दी है। कोरोना के खिलाफ टीकाकरण अभियान को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई। भारत बायोटेक की संयुक्त एमडी सुचित्रा एला को स्वदेशी कोविड -19 वैक्सीन कोवैक्सिन विकसित करने में उनकी शानदार भूमिका के लिए पद्म भूषण से सम्मानित किया गया है। महिमा दतला, एमडी, बायोलॉजिकल ई, ने 12-18 वर्ष की आयु के लोगों को दी जाने वाली कोविड-19 वैक्सीन विकसित करने के लिए अपनी टीम का नेतृत्व किया। निःसंदेह महिलाएं और लड़कियां समाज में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलाव की अग्रदूत हैं।

छठी आर्थिक गणना के अनुसार, हमारे पास देश में 8.05 मिलियन महिला उद्यमी हैं। शॉपक्लूज, घर और रसोई, दैनिक उपयोगिता वस्तुओं की मार्केटिंग के लिए 2011 में राधिका ओनलाइन स्टार्ट-अप शुरू किया गया। यह यूनिकॉर्न क्लब में प्रवेश करने वाली पहली भारतीय महिला उद्यमी थीं। राजोशी घोष के हसुरा, स्मिता देवराह के लीड स्कूल, दिव्या गोकुलनाथ के बायजू और राधिका घई के 'शॉपक्लूज' अन्य यूनिकॉर्न हैं, जो महिला स्टार्टअप की क्षमता के बारे में बहुत कुछ बयां करते हैं।

प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने देश में उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमियों के सामने आने वाली चुनौतियों को दूर करने के लिए स्टैंड-अप इंडिया और स्टार्ट-अप सम्बन्धि कई योजनाएं शुरू की हैं। अब एक महिला उद्यमिता मंच पोर्टल का गठन करना एक प्रमुख पहल है, जो नीति आयोग की एक प्रमुख पहल है। यह अपनी तरह का पहला एकीकृत पोर्टल है जो विभिन्न प्रकार की पृष्ठभूमि की महिलाओं को एक पटल देता है और उन्हें कई प्रकार के संसाधनों की सुविधा प्रदान करता है।

महिलाओं को उद्यमिता के क्षेत्रों मे पावं रखने के लिए महिला स्टार्ट-अप महत्वपूर्ण है। अब महिलाओं ने पूरी उर्जा के साथ उद्यमिता के क्षेत्रों में पांव जमाए हैं। बैन एंड कंपनी और गूगल के अनुसार, महिला उद्यमी 2030 तक लगभग 150-170 मिलियन नौकरियां पैदा करेंगी। एक आधिकारिक अनुमान के अनुसार, 2018-21 तक स्टार्टअप्स द्वारा लगभग 5.9 लाख नौकरियां पैदा की गईं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के माध्यम से शुरू से ही उद्यमिता के बीज बोने का सार्थक प्रयास किया जा चुका है।

हाल ही में हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ में आयोजित दीक्षांत समारोह में 24 छात्रों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए। जिनमें से 16 लड़कियां थीं। यह सिर्फ एक विश्वविद्यालय की बात नहीं है। वे लगभग हर संस्थान में लड़कों से कहीं बेहतर कर रही हैं। उनमें उत्कृष्टता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा और दृढ़ता है। "आजादी के अमृत महोत्सव" वर्ष के पहले भाग में ही केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्रालय ने 6-12 सितंबर के बीच केवल एक सप्ताह में 2614 स्वयं सहायता समूह के उद्यमियों को सामुदायिक उद्यम निधि का ऋण प्रदान किया।

स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के माध्यम से महिलाएं न केवल खुद को सशक्त बना रही हैं बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था की मजबुती में को भी योगदान दे रही है। सरकार के निरन्तर लगातार आर्थिक सहयोग से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में उनकी भागीदारी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। पिछले 6-7 वर्षों में महिला स्वयं सहायता समूहों का अभियान और तेज हुआ है। आज देश भर में 70 लाख स्वयं सहायता समूह हैं। महिलाओं के पराक्रम को समझने की जरूरत है जो हमें महिमा की अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचाएगी। आइए हम उन्हें आगे बढ़ने और फलने-फूलने में मदद करें। महिलाओं के सर्वांगीण सशक्तिकरण के लिए 'अमृत काल' इन्हें समर्पित हो।

श्रीमती मीनाक्षी आचार्य
पर्यवेक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

हर घर तिरंगे की पुकार

हर दिन की तरह आज ओडिशा के एक प्रमुख ओडिशा समाचार पत्र "संवाद" को जब मैंने पढ़ने के लिए उठाया तो इसके प्रथम पृष्ठ पर ओडिशा सरकार के सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग के एक सरकारी विज्ञापन में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी एवं ओडिशा के नए मुख्यमंत्री श्री मोहन चरण मांझी जी के फोटो वाले "हर घर तिरंगा" विज्ञापन पर मेरी नजर स्वत: गई। इसमें माननीय मुख्यमंत्री ने संदेश दिया है कि राष्ट्रीय पताका सिर्फ हमारा परिचय नहीं है यह हमारे स्वाधीनता का प्रतीक भी है। आईये हम सभी राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की पवित्र भावना से परिपूर्ण होकर हर घर में तिरंगा फहराएं।

इस बात पर याद आया कि मेरे मोबाईल पर भी मैसेज बॉक्स में भी इसी विषय पर मैसेज अपलोड हुआ है जो कि इस प्रकार है:

"Hoist Bharat's Pride & honour, our Tiranga at home from 9th to 15th August & participate in Har Ghar Tiranga. Click your selfie & upload on harghartiranga.com

हमारे देश के 78 वें स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त 2024 के पावन अवसर पर यह "हर घर तिरंगा" स्लोगन वास्तव में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा सारे देशवासियों के लिए एक आव्हान है कि प्रत्येक भारतीय इसी देशप्रेम की भावना में डूबकर एक बड़े उत्सव की तरह इसे मनायें।

इसमें दो राय नहीं है कि इस "हर घर तिरंगा" भारतवर्ष में देशभक्ति की भावना को उजागर करने में बहुत हद तक जरूर सफल होगा।

आज से 77 वर्ष पूर्व 15 अगसत 1947 को हमारा भारतवर्ष आजाद हुआ था। सन् 1857 में शुरू हुए प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम से लेकर अंत में राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी के अंहिसा आंदोलन और नेताजी सुभाषचंद्र बोस के द्वारा गठित आजाद हिंद फौज के "दिल्ली चलो" स्लोगन द्वारा समग्र देश में आई क्रांति के सैलाब के आगे अंग्रेज सरकार भारत को स्वतंत्रता देने के लिए विवश हुई।

सुबह-सुबह दैनिक समाचार पत्र पढ़ने की आदत के दौरान "हर घर तिरंगा" का स्लोगन मेरे मन में हमारे देश भारतवर्ष की आजादी के इतिहास को दोहरा रहा था। आज हम स्वाधीन देश के नागरिक हैं हमारा देश भारतवर्ष समस्त विश्व में सबसे बड़ा लोकतंत्र है। 15 अगस्त 1947 में आजादी पाने के बाद हमारे देश में लोकतांत्रिक उपायों से सरकार बन रही है और यह विकास के पथ पर अग्रसर है। हमारे देश की जल, थल और आकाश की सीमाएं सजग और सुयोग्य सैनिकों की देखरेख में सदैव सुरक्षित हैं। विश्व के अन्य देशों की तरह भारत भी असंख्य चुनौतियों का सामना करते हुए एक सुनहरे भविष्य की ओर अग्रसर है।

लेकिन उपर्युक्त सुखमय अनुभुतियों को पाने के लिए हमारे देश को अतीत में बेहद दर्दमय समय से गुजरना पड़ा है। आज भी हमारे देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए देशवासियों के अंदर देशप्रेम की भावना को जागृत रखना उतना ही आवश्यक है जितना कि स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व इसकी आवश्यकता थी।

हिमालय से सुशोभित हमारे देश भारत में विभिन्न धर्म, जाति, भाषा और रंग रूप के लोग रहते हैं:

"हिंद देश के निवासी सभीजन एक हैं

रंगरूप, भेष, भाषा चाहे अनेक हैं

बेला गुलाब जुही चंपा चमेली

न्यारे न्यारे फूल हैं पर माला फिर भी एक हैं"

बचपन में सुना हुआ देश भक्ति के गीतों में उपर्युक्त गीत आज भी बहुत अच्छा लगता है। सही अर्थ में भारत देश विविधता में एकता का एक जीवंत प्रमाण है। यह गीत दूरदर्शन पर एनिमेशन वीडियो के रूप में प्रसारित होता था तब विद्यालयों में 26 जनवरी एवं 15 अगस्त पर गाने के लिए समूह गायन का अभ्यास कराया जाता था जिसमें राष्ट्रीय गान के साथ साथ लगभग आठ दस प्रांतीय भाषाओं में विभिन्न देशभक्ति के गीत भी शामिल होते थे।

इन गीतों में से एक गीत था कवि मुहम्मद इकबाल द्वारा लिखा गया गीत सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा इस गीत में निम्नलिखित पंक्तियां बेहद प्रेरणादायी हैं:

"मजहब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना
हिंदी हैं हम, हिंदी हैं हम वतन है हिंदुस्तां हमारा"

उपर्युक्त प्रेरणादायी पंक्तियों की तरह दूरदर्शन पर गायक सुरेश वाडेकर द्वारा गाया हुआ यह गीत

"सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है
देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है"

इस गाने की धुन और शब्द आज भी हर भारतवासी के मन में देशभक्ति की पवित्र अग्नि रूपी भावना को जलाये रखने में सक्षम है। इस गीत के लेखक के बारे में जानकारी करने पर पता चला कि यह गीत बिहार के एक कवि बिस्मिल अजीमाबादी ने लिखा था। यह गाना उस समय के स्वाधीनता संग्रामियों की दिल की धड़कन बन गया था इस गाने को गाते हुए शहीद राम प्रसाद बिस्मिल हँसते हँसते फांसी के फंदे पर चढ़ गये थे। राम प्रसाद बिस्मिल हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसियेशन के सदस्य थे। जिसके अन्य प्रमुख सदस्य शहीद-ए-आजम भगत सिंह और शहीद चंद्रशेखर थे।

देशभक्ति भावनाओं से परिपूर्ण अनेक गानों में से एक और बेहद लोकप्रिय गीत था जिसका शीर्षक था वंदे मातरम्। इस गीत के रचियता थे तत्कालीन अविभाजित बंगाल के लोकप्रिय कवि और लेखक बंकिमचंद्र चटर्जी। इस गाने में तत्कालीन अखंड भारतवर्ष को भारतमाता के रूप में दर्शाया गया है। इस गाने का शीर्षक वंदे मातरम् भी उस समय के स्वाधीनता संग्रामियों का बेहद लोकप्रिय स्लोगन बन गया था।

इस तरह आज के दैनिक समाचार पत्र के प्रथम पृष्ठ में प्रकाशित सूचना एवं लोक संपर्क विभाग का यह "हर घर तिरंगा" का विज्ञापन मेरे मन में उपर्युक्त देशभक्ति की भावनाओं को उजागर करने में सफल रहा है और इसका उद्देश्य भी यही था।

श्री आनंद सिंह कोस्टा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)

एक दोस्त

जीवन में एक दोस्त हो ऐसा,
कोई न हो उसके जैसा।
बातें मन की समझे वो सारी,
न हो उसमें दुनियादारी।
संग रहे वो साये जैसा,
जीवन में एक दोस्त हो ऐसा ॥

खुशियों का जब मौसम आये,
मिल के संग वो ख़ुशी बढ़ाये।
जब भी बादल गम के छायें,
छाता बन वो साथ निभाए।
न छोड़े कभी जो साथ तुम्हारा,
एक दोस्त हो जीवन में ऐसा प्यारा ॥

सही-गलत जब राह न सूझे,
क्या करूँ ये बात न बूझे।
तब वो सच्ची दोस्ती निभाए,
सही राह तुमको दिखलाये।
रहे वो अपना, ना हो गैरों जैसा,
जीवन में एक दोस्त हो ऐसा ॥

श्रीमती एकता
पत्नी : श्री परमवीर कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

नारी तेरी जय जयकार

नारी तेरी जय जयकार
तेरे बिना सृष्टि निराधार....
जब तू ही है जग का आधार
फिर क्यों हो रहा तुझपे अत्याचार...

तू निर्मल है...
तू पावन है...
तेरे होने से बहारो में सावन है,
फिर क्यों तेरे वजूद की कदर भूल गया इंसान .....
करता है क्यूँ हर कदम पर तेरा अपमान .....
खुद के वजूद के जंग में माना तू आज अकेली है...
पर मत भूल ये कठिनाइयाँ तो जन्म से तेरी सहेली है.....

तू मत भूल तू दुर्गा है
और तू ही झाँसी की रानी है
इस बात को दुनिया मानती है
फिर तुझे किस बात की हैरानी है...
नारी तेरी जय जयकार
तेरे बिना सृष्टि निराधार...

सुश्री आक्षिता मोहपात्रा
सुपुत्री : श्री अमरेन्द्र मोहापात्रा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

चिड़िया रानी

चिड़िया रानी, चिड़िया रानी।
सुबह सबेरे उठ जाती हो।
ना जाने क्या गाती हो।।
क्या तुम भी पढ़ने को आती हो।
या नौकरी करने को जाती हो।।
शाम से पहले आती हो।
बच्चों का खाना लाती हो।।
भर - भर चोंच खिलाती खाना।
चूँ - चूँ चहक सुनाती गाना।।
डक - डक तिनका जोड़कर चिड़िया।
अपना घर बनाती हो।।
धूप, हवा, बारिश से।
अपना परिवार बचाती हो।।
मेहनत से तुम ना घबराना।
हम सब को सिखलाती हो।।
छोटे - छोटे हाथों से।
बड़े काम कर जाती हो।।

सुश्री दिव्यंका पलेई
सुपुत्री : श्री गोबिन्द चंद्र पलेई
लेखापरीक्षक

आजादी का पहला दिन

आजादी का पहला दिन
न जाने कैसा हुआ होगा।
बंजर जमीन में गिरी
वर्षा की बूंदों जैसा होगा।
देश का तिंरगा फिर से
लहराया होगा।
शहीदों का दुखी परिवार
फिर से मुस्कराया होगा।
खून से सनी थी जो मिट्टी
उसमें फिर से फूल खिले होंगे।
संग्रामों के बिछड़े साथी
फिर से मिले होंगे।
आजादी की सुगंध ने
वातावरण को फिर से महकाया होगा।
पंछियों ने भी उसी धुन में

गीत गुनगुनाया होगा।
विदेशी शासन समाप्त हुआ
सबने खुल के ली सांस
देश करेगा उन्नति
सबके मन में जागी ये आश
ये अपने लोग, अपना देश अपनी ये भूमि
बस रह गई थी हमारे बीच
एकता की कमी
सोने की चिडिया पिंजरे में
कब से थी पराधीन
नतमस्तक उन संग्रामियों को
जिन्होंने किया हमें स्वाधीन।
वो दिन न जाने कैसा होगा
उसकी बस की जा सकती है कल्पना
वर्षों के बाद आजाद भारत का
पूरा हुआ सपना
आजादी का पहला दिन
न जाने कैसा हुआ होगा।
बंजर जमीन में गिरी
वर्षा की बूंदों जैसा होगा।

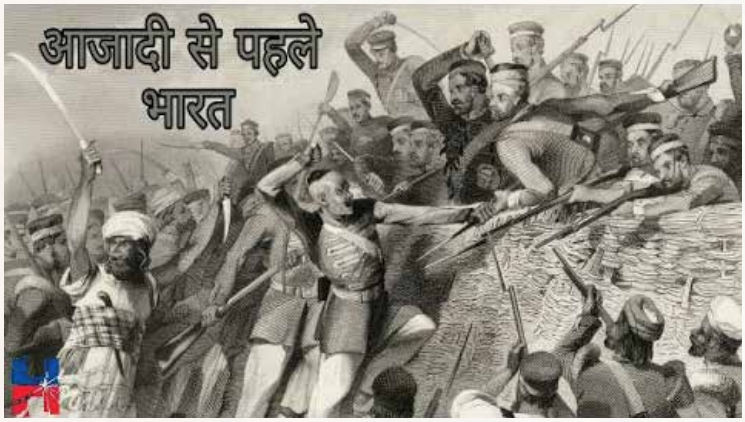

अदिति मोहंती

प्रिशा मोर्या